सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सह्याद्रि

38 वाँ अंक वर्ष 2023

महानिदेशक लेखापरीक्षा, (केंद्रीय)
का कार्यालय, मुंबई

रक्तदान शिविर की झलकियाँ

वर्ष 2023

अंक 38 वाँ

सत्यमेव जयते

सह्याद्रि

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय

सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा - कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व), मुंबई - 51.

मुखपृष्ठ

नई दिल्ली, बहरात में 9 और 10 सितम्बर 2023 को 18वे G20 शिखर सम्मलेन का आयोजन किया गया। यह पहला शिखर सम्मलेन था जब भारत ने G20 देशोंके शिखर सम्मलेन की मेजवानी की। इस शिखर सम्मलेन का विषय "वसुधैव कुटुंबकम" था जिसका अर्थ विश्व एक परिवार हैं।

चंद्रयान 3 भारत का महत्वाकांक्षी और सफल चंद्र मिशन हैं। चंद्रयान 3 दक्षिणी ध्रुव चन्द्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग करनेका भारत का सफल प्रयास हैं। चन्द्रमा के इस हिस्से तक पहुँचने वाला अबतक भारत एकमात्र देश हैं। इस महान सफलता को चिन्हित करने के लिए प्रत्येक वर्ष 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया जाता है।

सह्याद्रि परिवार

प्रकाशन

सह्याद्रि (हिन्दी पत्रिका 38 वां अंक)

संरक्षक

श्री. के. पी. यादव

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), मुंबई

प्रधान संपादक

श्री. देवेन्द्र

निदेशक

प्रकाशक

महानिदेशक लेखापरीक्षा, (केंद्रीय) का कार्यालय, मुम्बई - 400 051, महाराष्ट्र

मुख्य संपादक

सुश्री पूर्णिमा. एस.

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक

श्री.रणजीत सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

सुश्री वाणी विशालाक्षी वी. जे

वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री.बिना कुमारी राय

कनिष्ठ अनुवादक

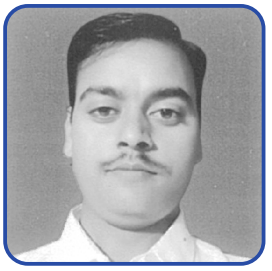

श्री. रोहित साह

कनिष्ठ अनुवादक

श्री. शशांक तिवारी

कनिष्ठ अनुवादक

"पत्रिका में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं। अतः संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।"

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय		पृ.क्र.
1.	रक्तदान शिविर की झलकियाँ		1
2.	मुख पृष्ठ		2
3.	सह्याद्रि परिवार		3
4.	अनुक्रमणिका		4 - 5
5.	गृहमंत्री का संदेश		6 - 7
6.	संरक्षक की कलम से		8
7.	प्रधान संपादक की कलम से		9
8.	आपके पत्र		10
9.	धम्म-वचन :ब्रह्मविहार	श्री. पद्माकर कुशवाहा, निदेशक	11 - 14
10.	विश्रांत जीवन	डॉ. दिनेश सिंह, भाई श्री रणजीत सिंह, स.ले.प.अ.	15
11.	चित्रकला	अद्वैत,सुपुत्र, श्री. रणजीत सिंह, स.ले.प.अ.	15
12.	महासमर पुस्तक की समीक्षा	श्री. राकेश कुमार सिंह, स.ले.प.अ.	16 - 17
13.	रक्तदान है महादान	श्री. निलेश जे.जाधव, कल्याण अधिकारी	18 - 19
14.	भारत की प्रसिद्ध महिला वैज्ञानिक	सुश्री. मधु सिंह, स.ले.प.अ.	20 - 22
15.	संगीत	सुश्री. दिव्यांशी सिंह, सुपुत्री श्री. राकेश कुमार सिंह	23 - 24
16.	चित्रकला	सुश्री. लावण्या एन.,सुपुत्री सुश्री. गार्गी के., व.ले.प.अ.	25
17.	इत्तेफाक	श्री. ऋषि राज, व.ले.प.अ.	26
18.	ऐसा क्यों ?	सुश्री. मंजुला महाराणा, व.ले.प.अ.	27
19.	जनरल डिब्बे	श्री. रोहित साह,कनिष्ठ अनुवादक	28
20.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की झलकियाँ		30
21.	हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ		31
22.	मैं और मेरी डायबिटीज	सुश्री. मनीषा वी. कदम,पर्यवेक्षक	32
23.	अंगदान (मृत/जीवित)	सुश्री. भाग्यलक्ष्मी भासकरण, स.ले.प.अ.	33
24.	अंगदान जागरूकता अभियान की झलकियां		34
25.	सत्रहवाँ श्रृंगार	श्री. कुमार सौरभ,ले.प.	35 - 37

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय		पृ.क्र.
26.	चित्रकला	सुश्री. आयुषी वर्मा, सुपुत्री, श्री सी.के. वर्मा, सहायक पर्यवेक्षक	37
27.	चित्रकला	सुश्री. लावण्या एन., सुपुत्री सुश्री. गार्गी के., व.ले.प.अ.	38
28.	चंद्रयान 3 (उम्मीदों का अंतरिक्ष)	श्री. हेमंत, डी.ई.ओ.	39
29.	स्वतंत्रता दिवस की झलकियाँ		41
30.	देश वंदन	श्री. किशोर कुमार , स.ले.प.अ.	42
31.	भारत	श्री. आदित्य कुमार, व.लेखापरीक्षक	43
32.	वस्तु एवं सेवा कर : इ- वे बिल	श्री. मुनिनाथ यादव, स.ले.प.अ.	44 - 46
33.	स्टार्ट अप इंडिया	श्री. मानवेन्द्र पाण्डेय, स.ले.प.अ.	47
34.	सेवा निवृति की झलकियाँ		48 - 49
35.	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की झलकियाँ		50

गृहमंत्री का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

संरक्षक की कलम से

आप सभी को यह सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि हमारी हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" का 38वां अंक प्रकाशित हो रहा है | जिसके माध्यम से हम राजभाषा हिंदी के प्रति अपने कर्त्तव्य, गौरव और आत्मसमर्पण की धार को उसके बगीचे को सीचनें हेतु प्रवाहित कर रहे हैं|

इस कार्यालय के सभी कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता को प्रस्तुत करने का माध्यम हमारी हिंदी पत्रिका रही है| "सह्याद्रि" पत्रिका में हिंदी भाषा के प्रति इसके प्रथम संस्करण के प्रकाशन से ही भाषाई प्रेम, सुविचार तथा आदर के भाव समाहित है | हमें अपार हर्ष का मान हो रहा है कि इस पत्रिका के जरिये कार्यालय के कर्मचारियों की साहित्यिक सृजनशीलता का तेजपुंज अभिमंडित हो रहा है| 38वें अंक के सफल सम्पादन हेतु, मैं संपादक मंडल और सभी लेखकों को हार्दिक बधाई देता हूँ| मेरी शुभकामनाएं है कि पत्रिका और इसका भविष्य देदीप्यमान सूर्य की अनंत ऊँचाइयों को अपने अंचल में समेट सके|

के.पी.यादव
महानिदेशक

प्रधान संपादक की कलम से

हमारी हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 38वें संस्करण के प्रकाशन पर मुझे गौरवान्वित और हर्षोल्लासित होने का एक नया मौका प्राप्त हो रहा है| यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति कार्यालय के कार्मिकों की परिष्कृत मनोदशा को उद्घाटित करती है | पत्रिका के प्रथम से लेकर नवीनतम 38वें संस्करण तक के सफल प्रकाशन में कार्यालय के कर्मिकों का योगदान रहा है जो इसे नयी ऊँचाइयों तक ले जाने को तैयार है|

मैं संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को इसके सफल प्रकाशन हेतु हृदय से धन्यवाद देता हूँ| मुझे विश्वास है कि इसका सफल प्रकाशन पाठकों में हिंदी भाषा के प्रति एक नया प्रभाव उत्पन्न करेगा |

पत्रिका की विशेष सफलता हेतु उज्ज्वलतम शुभकामनाएं और धन्यवाद |

देवेन्द्र
निदेशक / प्रशासन

आपके पत्र

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ 160017
O/o THE ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T. CHANDIGARH-160017
फैक्स - 0172-2703110, दू. सं. - 2702272, 2702072
क्रमांक - हिंदी कक्ष/समीक्षा/4-10/2022-23/584
दिनांक - 17/11/2023

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
मुंबई-400051

विषय - विभागीय हिंदी पत्रिका 'सहयाद्रि' के 37वें अंक की समीक्षा के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'सहयाद्रि' के 37वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

श्री पदमाकर कुशवाहा की 'धम्म वचन: तिलक्खण', श्री निलेश जाधव की 'हाँ ये पुरुष है', श्री दिनेश सिंह की 'अंतर्द्वंद्व', सुश्री संगीता लक्ष्मण दोडमणी की 'पिता' रचनाएं विशेष रुप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एंव संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

नरेश कौड़ा

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज - 211001
REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001
Phone : 2421364, 2421063, 2624467 Fax : 0532-2423485

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक - क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2023-24/379 दिनांक : 06.11.2023

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय- महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
मुंबई - 400051

विषय:- हिंदी पत्रिका 'सह्याद्रि' के 37वें अंक की पावती।

संदर्भ:- पत्रांक म.नि.ले.प.(के.)/रा.भा.अ./सह्याद्रि 37वाँ अंक/जा.सं. 32, दिनांक 02.11.2023

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सह्याद्रि' का 37वां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सादर धन्यवाद ।

पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। मुखपृष्ठ अत्यंत मनोरम है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं उच्च स्तर की एवं प्रशंसनीय हैं। एक ही पत्रिका में सभी विषयों को बखूबी समाहित किया गया है। समस्त रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। विशेषकर हाँ ये पुरुष है, बात कड़वी है,असहनीय है, अंतर्द्वंद्व एवं मुक्तक पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में प्रस्तुत चित्रांकन अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक हैं। समस्त रचनाकारों की प्रस्तुति सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रहें हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

06.11.23

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी – 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI – 781 029

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to truth in Public Interest

पत्र संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2023-24/2६8 दिनांक: 07/11/2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा- कुर्ला संकुल,
बांद्रा (पूर्व), मुंबई- 400051

09 NOV 2023

विषय: हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 37वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 37वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका की यह प्रतियां भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रूचिकर एवं प्रेणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री निलेश जाधव, कल्याण सहायक की कविता "हाँ ये पुरुष हैं।", श्री मुनिनाथ यादव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख "जीवन का उद्देश्य या लक्ष्य" तथा श्री एन दलवी, लेखापरीक्षक का लेख "पुस्तक की आत्मकथा" प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

हिंदी अधिकारी

Tele (EPABX) : 0361-2307712/2307716/2301656/2305215 FAX :0361-2303142/2305901
E-mail:agaeassam@cag.gov.in

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Accountant General
(Audit–II), West Bengal

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/ 116 दिनांक:- 10 /11/2023

10 NOV 2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई
महाराष्ट्र-400051

To,
Senior Audit Officer (Rajbhasha),
Office of The Director General of Audit (Central), Mumbai
Maharashtra -400051.

<u>विषय: राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका 'सह्याद्रि' के 37वें अंक का प्रेषण के संबंध में।</u>

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका, **'सह्याद्रि'** के 37वें अंक के ई-प्रति की प्राप्ति हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आतंरिक साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी सुंदर हैं। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ में रचनात्मकता की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है। कविता की श्रेणी में श्री निलेश जाधव कृत "हाँ ये पुरुष है", श्री रजनीश वर्मा कृत "हमारी एक अनमोल रातें" एवं लेख की श्रेणी में श्री पदमाकर कुशवाहा कृत "धम्म-वचन:तिलक्खण", श्री मुनिनाथ यादव कृत "जीवन का उद्देश्य या लक्ष्य", श्री कुमार सौरभ कृत "कार्यकुशलता के साथ व्यवहारकुशलता भी जरूरी" रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पत्रिका के अंत में सुश्री पूर्णिमा द्वारा किया गया छायाचित्र अत्यंत सुंदर है।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

10/11/23

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्ट लेक,कोलकाता- 700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854. e-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

धम्म-वचन : ब्रह्मविहार

श्री पदमाकर कुशवाहा
निदेशक

"The Light of Asia" अर्थात् "एशिया के प्रकाश" कहे जाने वाले ऐतिहासिक महापुरुष तथागत गौतम बुद्ध की कर्म-स्थली होने का सौभाग्य भारतवर्ष को मिला है। "धम्म" तथागत बुद्ध की देशना को कहा जाता है जिसमें समय-समय पर बुद्ध के अनुयायियों द्वारा उनकी समझ के आधार पर, और अधिक बातों का समावेश होता चला गया। कालांतर में इसने आडंबरों और कर्म-कांडों से युक्त संगठित धर्म का रूप भी ले लिया। पर इसके बावजूद, बुद्ध की "धम्म-देशना" एक अत्यंत ही विलक्षण ज्ञान-चर्चा है।

धम्म में "ब्रह्मविहार" अर्थात् "सर्वश्रेष्ठ आचरण" का उल्लेख मिलता है। एक सामान्य व्यक्ति के लिए शांति और संतुष्टि से परिपूर्ण जीवन-यापन हेतु बुद्ध कि शिक्षाओं पर आधारित कई देशनाएं/ उपदेश/ धम्म-निर्देश हैं। उनमें से एक प्रमुख देशना "ब्रह्मविहार" है जिसे "सर्वश्रेष्ठ आचरण" के रूप मे माना जाता है। इसमें चार प्रमुख व्यवहार हैं- मेत्ता, करूणा, मुदिता और उपेक्खा। बुद्ध-धम्म के अनुसार ये व्यवहार इस प्रकार हैं –

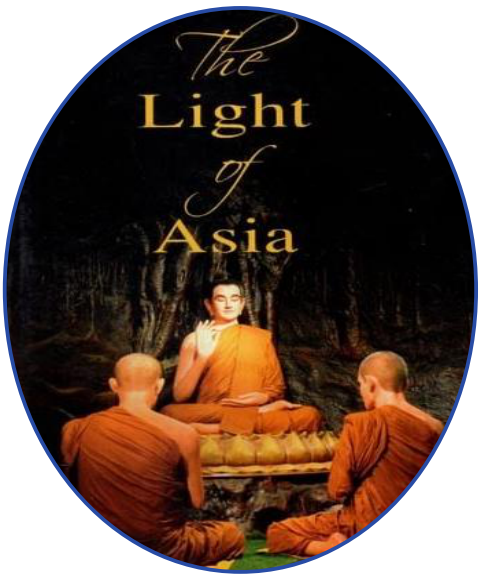

1. **मेत्ता**

"मेत्ता" का मतलब है "मित्रता (friendliness)"। बुद्ध-देशना/ धम्म में इसका निहितार्थ है- "किसी भी प्राणी को मित्र समझना"। यह हमारा स्वयं का मनोभाव है, इसका दूसरे जीव की परिस्थिति या उसके चरित्र/ आचरण से कोई संबंध नहीं होता है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि एक साँप को मित्र मानकर उसको हाथ मे लेने का प्रयास किया जाए क्योंकि ऐसी अवस्था मे सर्प-दंश मिलना अवश्यंभावी है। "मेत्ता" का भाव एक व्यक्ति के लिए निर्देश है कि उसे किसी भी जीव के साथ शत्रु जैसा भाव नहीं रखना है। हो सकता है कि सामने वाला शत्रु हो, तो उसके साथ मित्रवत व्यवहार करना उचित नहीं परंतु फिर भी भाव हमें मित्रवत ही रखना चाहिए। उससे सावधान रहना, उसको अपनी सीमा मे रखना और अपनी सुरक्षा करना अति-महत्वपूर्ण है परंतु उसके विनाश का विचार रखना न तो स्वयं के लिए, न ही समाज के लिए हितकारी होगा।

शत्रु का विनाश, युद्ध के प्रमुख नियमों में से एक है। परंतु यहाँ एक शांत और संतुष्ट जीवन-यापन के नियम बताए गए हैं, युद्ध/ राजनीति के नहीं। तथापि धम्म-पद मे कहा गया है कि-

"न हि वेरेन वेरानि, सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति, एस धम्मो सनन्तनो॥"

अर्थात यहाँ (इस लोक में) कभी भी वैर से वैर शांत नहीं होते, बल्कि अवैर से शांत होते हैं। यही सनातन धर्म है।

शत्रु का विनाश करने का भाव/ कर्म, और शत्रुता पैदा करता है जो फिर से विनाश करने को आतुर होता है, और इसका अंत कभी नहीं हो सकता जब तक कि एक भी शत्रु-भाव का जीव जीवित है। जन्तु-जगत मे हिंसा "भोजन-श्रृंखला" का परिणाम होती है, शत्रु-भाव का नहीं।

जैव-विकास (evolution) का एक मूल-आधार तत्व "अविश्वास (distrust)" है। अविश्वास, जीव के खुद के संरक्षण (survival) के लिए अति-आवश्यक है। परंतु इसके साथ ही यह भी एक सत्य है कि सामाजिक आश्रितता भी उतनी ही आवश्यक है। सामाजिक आश्रितता के लिए "विश्वास (trust)" एक आरंभिक शर्त होती है। धम्म-पद मे भी कहा गया है – " विस्सास परमा आति" अर्थात "विश्वास ही परम मित्र/बंधु है"। 'मेत्ता/ मित्र-भाव' हमें एक मध्यम-मार्ग दिखाती है जहाँ हमें विश्वास-अविश्वास में एक संतुलन बनाकर रहना होता है। अपनी सुरक्षा के साथ बिना समझौता किए, सभी जीवों/ प्राणियों को, सजगता के साथ, मित्र मानकर जीना होता है।

मित्र-भाव मे यह आशा हमेशा बनी रहती है कि शत्रुता समाप्त हो सकती है और एक शांत जीवन की परिकल्पना संभव है। कम -से -कम अपने मन की शांति तो बनी ही रहती है।

2. करुणा

"करुणा" का मतलब है "सहानुभूति (compassion)"। इस शब्द के समानार्थी रूप में "दया" और "नम्रता" को रखा जाता है। बुद्ध-देशना/ धम्म में इसका निहितार्थ है- "किसी प्राणी के कष्ट/ पीड़ा को समझना, उसका इस कठिन परिस्थिति में साथ देना और इस प्रकार का आचरण करना जिससे उसकी पीड़ा में या तो वृद्धि न हो या उसकी पीड़ा में कमी आए"। जहाँ मेत्ता हमें सभी जीवों के प्रति हर समय मित्र-भाव रखने की प्रेरणा देता है वहीं करुणा, जीवों की पीड़ा या उनकी दारुण अवस्था मे, मित्रता से भी आगे बढ़कर उनकी सहायता करने की प्रेरणा देता है। यहाँ दूसरे जीव की पीड़ादायी परिस्थिति हमारे भाव/ कर्म को प्रभावित करती है।

तथागत बुद्ध ने इस संसार की वस्तुस्थिति का गहनता से अध्ययन, मनन एवं साक्षात्कार करके यह निष्कर्ष निकाला था कि सभी मूर्त या अमूर्त वस्तुएं दुखदायी होती हैं, अर्थात् उनसे मानव को अंततः दुःख ही मिलता है। दुःख एक शाश्वत सत्य है और यह भी कि इसका निवारण भी संभव है। इसके निवारण हेतु तथागत बुद्ध ने 'अष्टांगिक मार्ग' का प्रतिपादन किया है।

करुणा हमें यह समझाने का प्रयास करती है कि जैसे हमें दुःख होता है वैसे ही बाकी सभी जीवों को भी दुःख होता है। उस दुःख का कारण, प्रकार या तीव्रता अलग-अलग जीव/परिस्थिति मे अलग-अलग हो सकती है। जैसे हम दुःख का निवारण चाहते हैं या दुःख सहने में किसी की सहायता/ मदद चाहते हैं वैसे ही बाकी जीव भी चाहते हैं। इसीलिए हमें सभी जीवों से सभी परिस्थिति में सहानुभूति अर्थात् करुणा रखनी चाहिए। इसके लिए दूसरे जीव की मनोस्थिति (point of view) को समझने का प्रयास करना आवश्यक है। करुणा के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने खुद के विचार या मनोस्थिति (point of view) दूसरे पर जबरन आरोपित न करें।

करुणा के दो प्रमुख घटक होते हैं- सामने वाले की पीड़ा का आँकलन और उसके अनुरूप व्यवहार। एक सामान्य व्यक्ति को दूसरे की पीड़ा तभी दिखाई दे सकती है जब उसको कोई बाहरी लक्षण जैसे आँसू/ क्रंदन/ सिसकी/ घाव आदि दिखे जबकि एक जागरूक व्यक्ति दूसरे की अव्यक्त पीड़ा भी समझ सकता है। सिद्ध/ बुद्ध व्यक्ति सामान्य तौर पर सुखी दिखने वाले व्यक्तियों के प्रति भी करुणा रखते हैं क्योंकि उनको माया-बद्ध व्यक्तियों की भविष्योन्मुख पीड़ा भी दिख जाती है।

अंततः, अजहर इनायती साहब का एक शेर कहना चाहूँगा-

"खुदकुशी के लिए थोड़ा सा ये काफी है मगर,
जिंदा रहने को बहुत जहर पिया जाता है। "

इस बात को हमेशा याद रखते हुए कि हर जिंदा शख्स रोज जहर पीते हुए ही जी रहा है, हमें दूसरों के साथ हमेशा करुणा के साथ पेश आना चाहिए।

3. मुदिता

"मुदिता" का मतलब है "प्रसन्नता" परंतु बुद्ध-देशना/ धम्म में इसका निहितार्थ है- "किसी दूसरे के सुख से प्रसन्न होना (celebration of other's happiness)"। करुणा जहाँ जीवों की पीड़ा या उनकी दारुण अवस्था से संबंधित है वहीं मुदिता उनकी प्रसन्न अवस्था से संबंधित है। यहाँ भी दूसरे जीव की सुखदायी परिस्थिति हमारे भाव/ कर्म को प्रभावित करती है। "मुदिता" द्वारा एक व्यक्ति के लिए निर्देश है कि उसे किसी भी जीव के साथ ईर्ष्या का भाव नहीं रखना है।

यह बहुत ही मुश्किल है कि जो सुख या उपलब्धि हमें न मिली हो अपितु किसी और को मिली हो, हम उसको खुशी से स्वीकार कर लें। प्रतिस्पर्धा और तुलना का भाव हमारे अंतरतम में बहुत गहराई तक पहुँचा हुआ होता है। और हो भी क्यूँ न, जैव-विकास (evolution) का ये मूल-आधार तत्व है। परंतु इसका एक आभासी अपवाद है- हमारी संतान! जो सुख या उपलब्धि हमें न मिली हो परंतु हमारी संतान को मिले, तो हम उसको न बल्कि खुशी से स्वीकार करते हैं वरन हम उसका जश्न भी मनाते हैं। यह एक इवोल्युशन का अपवाद प्रतीत तो होता है परंतु है नहीं, क्योंकि इवोल्युशन का अंतिम लक्ष्य ही अपने वंश की उत्तरोत्तर वृद्धि/ खुशहाली है और इसके लिए जीव अपना बलिदान भी कर देता है।

अतः ईर्ष्या का भाव न होना या मुदिता का भाव रखना तभी संभव है जब हम सभी प्राणियों/ मानवों से उतना ही प्रेम रखें जितना हम अपनी संतान से रखते हैं। जब हम यह मानें कि सभी जीव खुश होना चाहते हैं और यदि कोई खुश है तो हमें उसकी खुशी को, ईर्ष्या के वशीभूत होकर कमतर करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। आध्यात्मिक चेतना के स्तर पर एक और सीढ़ी ऊपर उठकर, उसकी खुशी को अपनी खुशी मानकर स्वयं भी खुश हो जाना चाहिए। मुदिता, सम्पूर्ण-विश्व को एक परिवार मानने को प्रेरित करती है।

अगर मुदिता का आचरण बहुत मुश्किल प्रतीत होता हो तो कम-से-कम हम इतना तो कर ही सकते हैं कि हमारे आचरण से किसी को कोई कष्ट न पहुँचे। जैसे कि इस्माइल मेरठी का एक शेर है-

"कभी भूलकर किसी से न करो सलूक ऐसा,
कि जो तुमसे कोई करता, तुम्हें नागवार होता।"

4. उपेक्खा

कुशल लोक-व्यवहार के लिए कहा गया यह चौथा कथन बहुत ही आध्यात्मिक है। शब्दार्थ हेतु, "उपेक्खा" का शाब्दिक अर्थ संस्कृत में "उपेक्षा (disregard)" किया गया है परंतु इसका प्रयोग तटस्थ भाव (neutral), पर्यवेक्षण भाव (observer view), समभाव/ समवृत्ति (equanimity), आदि को इंगित करने के लिए किया गया है। अतएव "उपेक्खा" का अर्थ हुआ "किसी भी परिस्थिति मे समभाव बनाए रखना, सुख या दुख दोनों को ही उपेक्षा भाव से या तटस्थ होकर और स्वयं को एक प्रेक्षक (observer) की भाँति मानकर अपनाना।

किसी दूसरे जीव की परिस्थिति को देखकर जो भाव हमें अपनाने चाहिए वो हैं करुणा और मुदिता। जबकि मेत्ता और उपेक्खा हमारे स्वयं के मनोभाव हैं, इनका दूसरे जीव की परिस्थिति या उसके चरित्र/ आचरण से कोई संबंध नहीं होता है।

उपेक्खा का भाव हमें जीवन जीने का नया तरीका देता है जिसमें हम जीवन के किसी भी हिस्से/ घटना से अपने आपको कभी बाँधते नहीं, बल्कि निर्लेप (untouched) भाव से बस गुजर जाते हैं जैसे कि कोई राही, किसी राह से गुजर जाता है। उपेक्खा भाव से जीने का मतलब है अनासक्त (unattached) होकर जीना। सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय, जीवन-मृत्यु, सम्मान-अपमान, प्रशंसा-निंदा, क्रोध-शांति, आदि द्वैतों में एक संतुलन बनाकर रखना ही उपेक्खा है। यह तथागत बुद्ध के मध्यम-मार्ग का स्मरण दिलाता है जिसमें जीवन में अनुभव किए जाने वाले दोनों प्रकार के अतिशयों (extremes) को उपेक्षित करते हुए बीच के संतुलित मार्ग से गुजर जाना होता है। ईशोपनिषद् में भी कहा गया है- "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा" अर्थात "उसका त्यागपूर्वक उपभोग करो"।

"ब्रह्मविहार" पर अपने इस निबंध/ व्याख्यान को मैं यहीं समाप्त करना चाहूँगा। ब्रह्मविहार के चारों भाव, हमें न केवल एक शांतिपूर्ण और संतुष्ट जीवन जीने की राह दिखाते हैं, अपितु यह एक सुदृढ़, शांत, समृद्ध और व्यक्तिगत स्तर पर संतुष्ट समाज के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह हमें हमारे इवोल्युशन से बँधे स्वतःस्फूर्त भावों को पहचानने और उनको रोकने में भी मदद देते हैं।

अंत में मैं बस तथागत बुद्ध के इस वचन को दुहराना चाहूँगा- "इहि पस्सिको" अर्थात् "आओ और देखो (come and see)"। इन धम्म-वचनों को बस इसलिए मत मानो कि किसी महापुरुष ने कहे हैं या किसी धर्म का सिद्धांत है, बल्कि इसको ख़ुद आज़माओ और फिर स्वयं निष्कर्ष निकालो।

इहि पस्सिको !!

★★★★★

विश्रांत जीवन

जीवन की भागम- भाग से अब थक चुका हूँ।
कुछ पाने की, कुछ खोने की चाहतें, अब किनारे रख चुका हूँ।
हैरान हूँ, परेशान हूँ, जिंदगी के नित नए सवालों से,
इतनी सी उम्र में ही सारा तजुर्बा चख चुका हूँ।
अंतहीन तृष्णा की डगर में, खो चुके हैं अब सभी अरमान मेरे,
मिट गई है मन की वो आशक्तियाँ, जो सदा से ही ठहरती प्राण घेरे।
अब अकिंचन मैं खड़ा हूँ बीच धारा, तैरने के सब इरादे तज चुका हूँ।
कर लिया हासिल जो मैंने खुद से चाहा, लालसा ने फिर भी मेरी राह रोकी,
अनगिनत उठते सवालों को सफर में, दे दिया उत्तर जो मैंने बात सीखी,
किंतु अब उस सत्य से ही सामना है, सब कुछ पा कर जैसे मैं अब लुट चुका हूँ।
चाहता हूँ जीना अब मैं शांत जीवन, निर्विकारों से भरा विश्रांत जीवन,
चाहना निर्वाण की उस कल्पना की, क्योंकि भौतिकता से अब मैं थक चुका हूँ।

डॉ. दिनेश सिंह
(श्री रणजीत सिंह (स. ले. प. आ.) के भाई)

चित्रकला

अद्वैत
सुपुत्र श्री रणजीत सिंह स.ले.प.अ.

★★★★★

महासमर पुस्तक की समीक्षा

श्री राकेश कुमार सिंह
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

हिंदी साहित्य की जो पुस्तकें मैंने पढ़ी हैं, उनमें डॉ नरेंद्र कोहली जी द्वारा लिखी गई रचना "महासमर" मुझे विशेष रूप से पसंद है। इस रचना को उन्होंने आठ भागों में लिखा है। इस पुस्तक में महाभारत की कहानी को बड़े ही सुन्दर और तार्किक तरीके से प्रस्तुत किया गया है, जो हमें कई अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर देता है। भारतीय चिंतन व दर्शन को मूर्तरूप देने वाली इस रचना को पढ़कर पाठकों के समक्ष महाभारत काल सजीव हो उठता है। हर एक खंड अपने आप में विशेष है। पत्रिका के पिछले अंक में मैंने प्रथम दो खंडों के बारे में लिखा था। इस अंक में मैं तीसरे और चौथे अंक में बारे में अपने विचार प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहा हूँ।

तीसरा खंड - कर्म

महासमर के तीसरे खंड - कर्म की कथा युधिष्ठिर के युवराज अभिषेक के पश्चात की कथा है - वारणावत कांड, भीम-हिडिम्बा विवाह और घटोत्कच का जन्म, बकासुर वध, द्रौपदी का स्वयंवर और पाँचो पांडव से विवाह, पांडवों का पांचाली संग हस्तिनापुर लौटने पर राज्य का विभाजन और उन्हें बंजर और निर्जन खांडवप्रस्थ हिस्सा मिलना।

इस युवराज अभिषेक के पीछे मथुरा की यादव शक्ति है। अपनी राजनीति में उलझ जाने के कारण जब यादव पाण्डवों की सहायता नहीं कर पाते, दूसरी ओर गुरु द्रोण का वरदहस्त भी पाण्डवों के सिर से हट जाता है तो दुर्योधन पाण्डवों को वारणावत में भस्म करने का षड्यन्त्र रच डालता है। वारणावत से जीवित बच कर पाण्डव पांचालों की राजधानी काम्पिल्य में पहुँचते हैं। पाण्डवों का वारणावत से काम्पिल्य पहुँचाने की योजना इस कथा खण्ड का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। उन्हें हिडिम्ब वन से किसने निकाला? उनके काम्पिल्य तक सुरक्षित पहुँचने की व्यवस्था किसने की? और उन्हें काम्पिल्य ही क्यों लाया गया? इन सभी प्रश्नों के उत्तर लेखक ने बड़े ही सरल अंदाज में दिया है। लोगों के मन में सदा से एक प्रश्न काँटे के समान चुभता रहा है कि एक स्त्री के पाँच पुरुषों के साथ विवाह कर दिये जाने के पीछे क्या तर्क था? उसका औचित्य क्या था? लेखक ने अपनी विशिष्ट, तथ्यपरक, तर्कसंगत शैली में इन प्रश्नों के समुचित उत्तर इस खण्ड में दिये हैं। पाण्डवों का हस्तिनापुर लौटना एक प्रकार का गृहागमन भी है और मृत्यु के मुख में लौटना भी। पाण्डवों का सत्कार होता, किन्तु धृतराष्ट्र की योजना उन महावीर पाण्डवों को पुनः हस्तिनापुर से निष्कासित कर, खाण्डवप्रस्थ वन में फेंक देती है। भीष्म, विदुर, कृष्ण तथा व्यास के होते हुए भी पाण्डवों को हस्तिनापुर क्यों छोड़ना पड़ा?... ऐसे ही और सहज प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करता है यह उपन्यास।

यह ग्रंथ महाभारत की केंद्रीय कथा को मुख्यतः युधिष्ठिर के राज्याभिषेक और वारणावत के प्रसंग पर समर्पित है। लेखक ने इन प्रमुख घटनाओं का बहुत ही सुंदर और संवेदनशील वर्णन किया है और पाठकों को इस प्रमुख घटना की महत्ता को समझने में मदद की है। युद्ध, प्रेम और नीति के उदाहरणों के माध्यम से इस पुस्तक ने महाभारत के महानायक की कथा को जीवंत बनाया है।

चतुर्थ खंड - धर्म

'महासमर' का यह चौथा खण्ड है – 'धर्म'। पाण्डवों को राज्य के रूप में खाण्डवप्रस्थ मिला है, जहाँ न कृषि है, न व्यापार। सम्पूर्ण क्षेत्र में अराजकता फैली हुई है। अपराधियों और महाशक्तियों की वाहिनियाँ अपने षड्यन्त्रों में लगी हुई है और उनका कवच है खाण्डव-वन, जिसकी रक्षा स्वयं इन्द्र कर रहा है। उधर अर्जुन के सम्मुख अपना धर्म-संकट है। उसे राज-धर्म का पालन करने के लिए अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ती है और बारह वर्षों का ब्रह्मचर्य पूर्ण वनवास स्वीकार करना पड़ता है। किन्तु इन्हीं बारह वर्षों में अर्जुन ने उलूपी, चित्रांगदा और सुभद्रा से विवाह किये। न उसने ब्रह्मचर्य का पालन किया, न वह पूर्णतः वनवासी ही रहा।

क्या उसने अपने धर्म का निर्वाह किया? धर्म को कृष्ण से अधिक और कौन जानता है? अर्जुन और कृष्ण ने अग्नि के साथ मिलकर, खाण्डव-वन को नष्ट कर डाला। क्या यह धर्म था? इस हिंसा की अनुमति युधिष्ठिर ने कैसे दे दी? और फिर राजसूय यज्ञ की क्या आवश्यकता थी? जरासन्ध जैसा पराक्रमी राजा भीम के हाथों कैसे मारा गया और उसका पुत्र क्यों खड़ा देखता रहा? अन्त में हस्तिनापुर में होने वाली द्यूत-सभा। धर्मराज होकर युधिष्ठिर ने द्यूत क्यों खेला? अपने भाइयों और पत्नी को द्यूत में हारकर किस धर्म का निर्वाह कर रहा था धर्मराज? द्रौपदी की रक्षा किसने की? कृष्ण उस सभा में किस रूप में उपस्थित थे? – ऐसे ही अनेक प्रश्नों के मध्य से होकर गुजरती है 'धर्म' की कथा। यह उपन्यास न केवल इन समस्याओं की गुत्थियाँ सुलझाता है बल्कि उस युग का, उस युग के चरित्रों का तथा उनके धर्म का विश्लेषण भी करता है।

इस खंड की तीन खासियत है -
पहला - इसमें इंद्र, अग्नि और नागों/तक्षक को इंसान के रूप में ही दिखाया है।
दूसरा - द्यूत के समय युधिष्ठिर की मनोस्थिति और उसके अवस्था का गहराई से विश्लेषण।
तीसरा - चीरहरण के समय दुशासन के असफल होने का कृष्ण से जुड़ा जो कारण बताया है वो तर्कसंगत लगता है।

उपन्यास के इन दो खण्डों को पढ़ कर पाठक अपने आप को महाभारत काल की राजनीतिक , सामाजिक और नैतिक व्यवस्थाओं के और समीप पाता है। जहाँ प्रथम दो खण्डों में महाभारत कथा की पृष्ठभूमि तैयार हुई थी , इन दो खण्डों ने महाभारत युद्ध का कारण और दोनों पक्षों के बीच वैमनस्य के चरम को बढ़ते बताया है। इस उपन्यास की विशेषता यही है कि लेखक ने कई कठिन प्रश्नों के उत्तर बड़े ही तार्किक और सरल रूप से दे दिए है, जिससे उपन्यास को और आगे पढ़ने की लालसा बढ़ती जाती है। साथ ही इस उपन्यास को पढ़कर 'महाभारत' ही नहीं, धर्म के प्रति भी पाठकों का दृष्टिकोण कुछ अधिक उज्जवल होकर रहेगा।

★★★★★

रक्तदान है महादान

श्री. निलेश जे. जाधव
कल्याण सहायक

रक्तदान करना इंसानियत के नाते इंसानियत का फर्ज अदा करने जैसा है। रक्तदान एक ऐसा दान है, जिसे केवल मनुष्य ही कर सकता है। रक्त को किसी भी मशीन द्वारा बनाया नही जा सकता है। एक व्यक्ति द्वारा दिया हुआ रक्त कुछ ही घंटे मे फिर दोबारा उसके शरीर में बन जाता है। रक्तदान अवश्य करना चाहिए। रक्त का विकल्प केवल मनुष्य ही है। रक्तदान से तो किसी इन्सान की जान भी बच जाती है, लेकिन जो रक्तदान करता है उसे भी रक्तदान के बाद हार्ट अटैक का खतरा कम हो जाता है। एक सामान्य व्यक्ति एक बार मे 1 यूनिट रक्तदान करके 3 लोगों की जान बचा सकता है। कैंसर से लेकर आपातकालीन सर्जरी और दुर्घटना की वजह से कई बार लोगों का काफी रक्त नष्ट हो जाता है। इस स्थिति में उन्हें रक्त की जरुरत होती है। ऐसे लोगों को रक्तदान करके उनकी जरुरत को पूरा किया जा सकता है। रक्तदान करने के बाद, शरीर में रक्त कोशिकाओं की संख्या कम हो जाती है, जिसके बाद नई कोशिकाएं बनने शुरु हो जाती है। यह निश्चित रुप से एक स्वस्थ प्रक्रिया है, जिसे करने के बाद व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है। रक्तदान के पश्चात बनी नई रक्त कोशिकाएं पूरे शरीर को तरो-ताजा कर देती है।

दहिसर में स्थित बोरीवली ब्लड सेंटर एक दशक पुराना संगठन है जो विभिन्न अस्पतालों और नर्सिंग होम को सेवा प्रदान करता है। यह पूरे मुंबई में थैलिसीमिया रोगियों को निःशुल्क रक्त प्रदान करके सहायता करता है। दहिसर में स्थित बोरीवली बल्ड सेन्टर **FDA ISO 9.00 : 2008** से प्रमाणित और भारतीय गुणवत्ता परिषद के सदस्य, द्वारा 11 अगस्त' 23 को रक्तदान शिविर का आयोजन महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय में एल.एण्ड.आर क्लब ने आयोजित किया था। शिविर सुबह 10.00 बजे शरु हुआ और दोपहर 3.00 बजे तक चला था। रक्त संग्रह के लिए बोरीवली बल्ड सेन्टर के डॉक्टरों और नर्सों की एक टीम आई थी। शिविर में कार्यालय से 60 लोगों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया।

रक्तदान की समाप्ति पर सभी रक्तदाताओं को कृतज्ञता के प्रतीक के रुप में प्रंशसा पत्र, दान कार्ड और जल पान दिया गया था।

रक्तदान में भाग लेने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के नाम निम्नलिखित है।

पदमाकर कुशवाहा, निदेशक	संजय पालये	भावेश वरलीकर
मोहम्मद फैजान नय्यर, निदेशक	सतशिल कल्लप्पा कांबले	अतुल देवलकर
अविनाश जाधव, निदेशक	बिना कुमारी राय	संगराम पवन
अरविंद बारा,व.ले.प.अ	वाणी विशालाक्षी	जयबहादुर कुमार
पूर्णिमा एस, व.ले.प.अ	संदीप जाधव	संजय पी. कदम
सुधीर कदम	अजिंक्य सेजवाल	रमेश एस. नागरे
सीताराम गांवनकर	संदिप जाधव	हनुमंत जे. कदम
आर.एस. शिवकुमार	योगेश पालये	राजेश कालकुरी
लक्ष्मण दोडमणी	वैभव जयसवाल	शमसुल खान
प्रथमेश मोरे	ओमप्रकाश मीना	सागर गेठे
गौरव कुमार	विकास कुमार कुंदु	अरविंद सुर्वे
रंजय कुमार सिंह	श्रीस कुमार मौर्या	अभिषेक पाटिल
प्रतीक मोरये	पंकज कुमार बंसल	शशांक तिवारी
आशिष कुमार	गौतम कुमार	अन्नपूर्णा बनर्जी
ओमकार सरवणकर	सागर गुप्ता	सिद्धांत थोसर
हर्षद पाटिल	राकेश बालन	निशा आयर
राजेश कुमार रंजन	मनोज कुमार	दीपक शर्मा
श्रीकांत वाघमारे	संदेश सावंत	रमेश तोडकर
गौतम कुमार	संतोष सुलपुले	देवेंद्र गावडे
संजय कुमार रजक	अशिष सोकिन	मोहम्मद अकयुदास खान

★★★★★

भारत की प्रसिद्ध महिला वैज्ञानिक

सुश्री. मधु सिंह
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

समय के साथ-साथ विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है, लेकिन लगभग हर दौर में विज्ञान को आगे बढ़ाने में किसी न किसी महिला वैज्ञानिक का भी हाथ रहा है। जहाँ तक सबसे मशहूर महिला वैज्ञानिक की बात सामने आती है वहां सबसे पहले मैडम क्यूरी का नाम आता है जिन्होंने रेडियम की खोज की थी, लेकिन ऐसा नहीं है कि भारत में महिला वैज्ञानिकों की कमी रही है। मैं आपको बताने जा रही हूँ भारत की ऐसी महिला वैज्ञानिकों के बारे में जिन्होंने अपने काम से भारत का नाम इतिहास में रच दिया।

श्रीमती आनंदीबाई गोपालराव जोशी (1865-1887)

भारत की पहली महिला फिजीशियन थीं आनंदीबाई गोपालराव जोशी। ये वो महिला थीं जो उस दौर में जब महिलाओं को पढ़ाया नहीं जाता था तब अमेरिका से मेडिसिन की डिग्री हासिल करके आई थीं। उनकी शादी **9** साल की उम्र में ही कर दी गई थी। उनके पति उनसे **20** साल बड़े थे और आनंदीबाई उनकी दूसरी पत्नी थीं। आनंदीबाई **14** साल की उम्र में माँ बन गई थीं, लेकिन उनका बेटा कम उम्र में ही दवाओं की कमी के कारण मर गया था। इसी वजह से उन्होंने दवाइयों पर रिसर्च करने की सोची। आनंदीबाई के पति ने उन्हें विदेश जाकर मेडिसिन पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

उन्होंने वुमन्स मेडिकल कॉलेज पेंसिलवेनिया से पढ़ाई की थी। ये दुनिया का पहला मेडिकल कॉलेज था जो खास तौर पर महिलाओं के लिए था।

श्रीमती कमला सोहोनी (1912-1998)

कमला जी वो पहली भारतीय महिला वैज्ञानिक थीं जिन्होंने **PhD** की डिग्री हासिल की थी। उन्होंने **IISc** में रिसर्च फेलोशिप के लिए अप्लाई किया था, लेकिन उन्हें सिर्फ इसलिए रिजेक्ट कर दिया गया क्योंकि वो एक महिला थीं। वो प्रोफेसर सी वी रमन की पहली महिला स्टूडेंट थीं। उनकी परफॉर्मेंस के चलते श्री सी. वी. रमन ने उन्हें और आगे रिसर्च करने की इजाजत दे दी थी। उन्होंने ये खोज की थी कि हर प्लांट टिशू में **'cytochrome C'** नाम का एन्जाइम होता है। रिजेक्ट होने के बाद भी अपनी रिसर्च के लिए आगे बढ़ने वाली कमला महिला सशक्तिकरण के मामले में भी एक मिसाल थीं।

(श्रीमती जानकी अम्माल 1897-1984)

भारत में पद्मश्री से सम्मानित होने वाली ये पहली महिला वैज्ञानिक थीं। उन्हें **1977** में पद्मश्री दिया गया था। इन्हें बॉटेनिकल सर्वे ऑफ इंडिया के डायरेक्टर के पद पर भी रखा गया था। **1900** के दशक में उन्होंने बॉटनी चुनी जो उस दौर में महिलाओं के लिए एक अनोखा सब्जेक्ट माना जाता था। इसके बाद उन्होंने प्रेसिडेंसी कॉलेज से बॉटनी में ऑनर्स की डिग्री हासिल की। **cytogenetics** में उन्होंने रिसर्च शुरू की। इसके बाद गन्ने और बैंगन की अलग-अलग प्रजातियों पर काम किया और इसके लिए उन्हें सम्मानित किया गया।

श्रीमती असीमा चटर्जी (1917-2006)

केमेस्ट्री में अपने काम के लिए बहुत प्रसिद्ध रहीं असीमा कलकत्ता के स्कॉटिश चर्च कॉलेज से **1936** में केमेस्ट्री सब्जेक्ट में ग्रैजुएट हुई थीं। एंटी-एपिलिप्टिक (मिरगी के दौरे), और एंटी-मलेरिया ड्रग्स का डेवलपमेंट इन्होंने ही किया था। इसके अलावा, कैंसर से जुड़ी एक रिसर्च में भी ये शामिल थीं।

श्रीमती राजेश्वरी चटर्जी (1922-2010)

कर्नाटका की पहली महिला इंजीनियर राजेश्वरी को सरकार की तरफ से विदेश में पढ़ने के लिए स्कॉलरशिप मिली थी। ये **1946** की बात है। यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन में उन्होंने इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में मास्टर्स की डिग्री की और उसके बाद उन्होंने डॉक्टरेट की डिग्री हासिल की। भारत वापस आने के बाद उन्होंने **IISc** में इलेक्ट्रिकल कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट में बतौर फैकल्टी मेंबर हिस्सा लिया और उसके बाद अपने पति के साथ माइक्रोवेव रिसर्च लैबोरेटरी खोली।

श्रीमती कल्पना चावला (1962-2003)

जहां तक महिला वैज्ञानिकों की बात है तो एस्ट्रोनॉट कल्पना चावला का नाम बहुत ऊपर लिया जाता है। कोलंबिया स्पेस शटल से अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की वो पहली महिला वैज्ञानिक थीं। **1982** में अमेरिका जाकर एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में मास्टर्स की डिग्री लेने वाली कल्पना ने **1986** में दूसरी मास्टर्स की डिग्री ली और फिर **1988** में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में **PhD** भी की। **1** फरवरी **2003** को कोलंबिया शटल डिजास्टर में मरने वाले क्रू मेंबर्स में से एक कल्पना चावला भी थीं।

डॉक्टर इंदिरा हिंदुजा (1946 -)

ह्यूमन इन विटरो फर्टिलाइजेशन एंड एम्ब्रियो ट्रांसफर **('Human In Vitro Fertilisation and Embryo Transfer')** यानी आसान भाषा में टेस्ट ट्यूब बेबी के क्षेत्र में रिसर्च करने वाली डॉक्टर इंदिरा हिंदुजा भारत की जानी मानी गायनिकोलॉजिस्ट हैं। वो इन्फर्टिलिटी स्पेशलिस्ट भी हैं। उनकी तकनीक **Gamete intrafallopian transfer (GIFT)** की वजह से भारत का पहला **GIFT** बच्चा हुआ था। इसके अलावा, उन्होंने 6 अगस्त 1986 को केईएम अस्पताल में भारत की पहली टेस्ट ट्यूब बेबी को डिलिवर करने में मदद भी की थी। उन्होंने बॉम्बे विश्वविद्यालय में ह्यूमन इन विट्रो फर्टिलाइज़ेशन एंड एम्ब्रियो ट्रांसफर पर थीसिस जमा की और पीएचडी की डिग्री प्राप्त की।

डॉक्टर अदिति पंत (1943 -)

ओशिएनोग्राफर **(oceanographer)** यानी समुद्र पर रिसर्च करने वाली डॉक्टर अदिति पंत भारत की पहली महिला थीं जो अंटार्कटिका में **1983** में भारतीय दल के साथ जियोलॉजी और ओशिएनोग्राफी पर रिसर्च करने गई थीं। उन्हें अमेरिकी स्कॉलरशिप भी मिली थी कि वो हवाई में मरीन साइंस की डिग्री ली। इसके बाद लंदन के वेस्ट फील्ड कॉलेज से उन्होंने **PhD** की। अदिति ने अपने कैरियर की शुरुआत राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, गोवा में वहां के संस्थापक, एन.के. पनिकर से प्रेरित होकर की। वह तटीय अध्ययन में शामिल रहीं और पूरे भारत के पश्चिमी तट का दौरा किया। उन्होंने समुद्र विज्ञान और भूविज्ञान अनुसंधान के बारे में अंटार्कटिका के लिए तीसरे और पांचवें भारतीय अभियान में हिस्सा लिया । वे अंटार्कटिका अभियान में शामिल होने वाली पहली भारतीय महिला हैं।

श्रीमती रितु करिधाल (1975 -)

ऋतु करिधाल भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के साथ काम करने वाली एक भारतीय वैज्ञानिक हैं। पिछले साल ही **ISRO** में मंगलयान के प्रोजेक्ट पर काम करने वाली रितु करिधाल का नाम काफी चर्चा में आया था। वो भी विज्ञान के क्षेत्र में काफी आगे हैं। वह भारत के मंगल कक्षीय मिशन, मंगलयान के उप-संचालन निदेशक थीं। उन्हें भारत की "रॉकेट वुमन" के रूप में जाना जाता है। वह लखनऊ में पैदा हुई थी और एक एयरोस्पेस इंजीनियर हैं। उन्होंने पहले भी कई अन्य इसरो प्रोजेक्ट्स के लिए काम किया है और इनमें से कुछ के लिए ऑपरेशन डायरेक्टर के रूप में काम किया है।

★★★★★

संगीत

हमारे जीवन में संगीत का बड़ा महत्त्व है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन काल में कभी न कभी संगीत से अवश्य प्रभावित होता है। परन्तु संगीत है क्या ? संगीत को महसूस एवं अनुभव करने से होने वाले विविध लाभों के कारण इसे "आत्मा का भोजन" भी कहा जाता है। कोई कहेगा की संगीत सुर है , तो कोई कहेगा की संगत धुन है, कोई इसे ताल कहेगा तो कोई राग। सबकी अपनी अपनी परिभाषाएं होंगी। सच्चाई यह है कि संगीत ध्वनियों और धुनों से कहीं ज्यादा है। संगीत वह आयाम है जिससे हमें आनंद और शांति मिलती है। संगीत कला का वह रूप है जिसका आनंद पूरी दुनिया लेती है। संगीत मानवीय लय एवं तालबद्ध की अभिव्यक्ति है। अच्छा संगीत हमेशा आनंदित करता है , ये अच्छा संगीत हरेक व्यक्ति के लिए भिन्न होता है। यह हमारे जीवन का एक बड़ा हिस्सा बन चुका है। संगीत का प्रारम्भ कहाँ और कब हुआ , यह कोई नहीं जनता। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि संगीत मनुष्य के धरती पर अस्तित्व में आने के पहले से है। नासा के नए शोध में यह पाया गया है कि ब्रह्माण्ड में उत्पन्न होने वाली लाखों करोड़ों ध्वनियाँ भी संगीतमय हैं।

भारत में महान संगीतकारों का बहुत ही पुराना इतिहास रहा है। भारत के संगीत कि जड़ें वैदिक काल में भी मिलती हैं। नादब्रह्मा का सिद्धांत वैदिक युग में भी विद्यमान था। संगीत के सभी रूप सामवेद में मिलते हैं, जिसमें संगीत का सबसे पहला रूप पाया जाता है। सबसे पहला और पुराना लिखित राग सामवेद में ही उद्दृत है। कालांतर में संगीत के अनेक रूप अलग अलग नामों से भारत के हरेक प्रांत और क्षेत्र में विकसित हुए। इसी प्रकार विश्व के हरेक कोने में संगीत अलग अलग रूप और नाम से विकसित हुई। परन्तु स्वरूप अलग होने के बावजूद इसका प्रभाव मानव मन पर समान रूप से पड़ा।

संगीत अपने आप में एक दुनिया है, जो सृजनात्मकता से भरपूर है। संगीत का सृजन तो किसी भी वस्तु से किया जा सकता है - वाद्य यन्त्र तो उनका विशुद्ध रूप हैं , जिनसे संगीत बनता है। हमारे आस पास पायी जाने वाली किसी भी वस्तु से यह बनाया जा सकता है,यह हम सबने देखा ही है। संगीत को विभिन्न रूपों में बांटा जा सकता है, इनमें से कुछ हैं –

- शास्त्रीय संगीत
- जैज
- रॉक
- पॉप
- ब्लूज
- लोक संगीत
- हिप हॉप इत्यादि।

ये सभी इनमें उतपन्न ध्वनि के कारण अलग अलग हैं।

संगीत सुनना हमारे मन के लिए बहुत अच्छा होता है, इससे मन शांत होता है और हमें आराम महसूस होता है। आजकल इसका उपयोग अस्पतालों , कार्यस्थलों , सार्वजनिक स्थलों, विद्यालयों - महाविद्यालयों जैसे स्थानों पर भी हो रहा है। अस्पतालों में धीमी और शांत संगीत मरीजों के दिल की धड़कन को शांत करता है और उन्हें सामान्य तरीके से साँस लेने में मदद करता है। यह सुनने वालों को प्रेरित करता है एवं उन्हें ऊर्जावान बनाता है। भारतीय सभ्यता में राग चिकित्सा के द्वारा संगीत के औषधीय प्रभावों के बारे में बताया गया है। राग चिकित्सा के माध्यम से एक प्राचीन उपचार्य पद्धति नदियों को पुनर्जीवित किया गया है कार्यस्थलों में यह उत्पादकता को बढ़ने में सहायक हो रहा है। तो विद्यालयों और महाविद्यालयों में इसका उपयोग विद्यार्थियों की एकाग्रता को बढ़ाने के लिए किया जाता है। संगीत का सकारात्मक प्रभाव न सिर्फ हम मनुष्यों पर होता है। परन्तु शोध में यह पाया गया है कि पेड़ -पौधों और पशु पक्षियों पर भी इसका असर सकारात्मक होता है। इस प्रकार संगीत हमारे जीवन के हरेक पहलू में किसी-न-किसी प्रकार से सहायक सिद्ध हो रहा है।

हमलोग भाषा, धर्म , रंग, नस्ल और न जाने कितनी ही प्रकार से अलग अलग हैं। लेकिन संगीत की वजह से हम एक हो जाते हैं। संगीत सभी पूर्वाग्रहों से दूर करता है। जिन लोगों के पास एक दूसरे से बात करने कोई कारण नहीं होता है वो जब अपना पसंदीदा संगीत सुनते हैं तो बातें करने लग जाते है। संगीत बंधन में बांधने वाली चीज है। इसमें दुनिया भर के लोगों को एक साथ करने की ताकत है। उपर्युक्त कारणों से यह कहा जा सकता है कि संगीत हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसने हमारे जीवन को अनेक रूपों में प्रभावित किया है।

सुश्री दिव्यांशी सिंह
सुपुत्री - श्री राकेश कुमार सिंह
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

★★★★★

चित्रकला

सुश्री लावण्या एन

सुपुत्री सुश्री गार्गी के/ व.ले.प.अ.

इत्तेफ़ाक़

श्री ऋषि राज
व.ले.प.अ.

एक जमाना बीत गया तुमसे बिछड़े

वो सारी बातें आज भी मेरे जहन में है

बिल्कुल उसी तरह जैसे किसी की सारी दौलत हो

कितना सुकून देता था जब हम साथ-साथ होते थे

कभी ये सोचा भी नहीं था कि तुमसे इत्तेफ़ाकन मुलाक़ात होगी

आज पास - पास बैठे हैं चाय की प्याली पड़ी है

बातें कैसे शुरू करें समझ नहीं पा रहा था

कभी ऐसा था कि बातों का सिलसिला ही ख़तम नहीं होता

सोचा था गिले - शिक़वे दूर करुंगा, गलतफहमी दूर करुंगा

पता नहीं इसके अब मायने भी हैं या नहीं

अच्छा लगा जानकर तुम विदेश में सेटल होने जा रही हो

मेरी फ्लाइट का टाइम भी हो चुका है

मुझे भी जाना है दिल्ली ऑफिस के काम से

जाना पड़ेगा, तुम्हारी कुछ बातें सौगात में लिए जा रहा हूँ और

ऐसे ही इत्तेफ़ाक़ के इंतज़ार में...

★★★★★

ऐसा क्यों ?

सुश्री. मंजुला महाराणा
व.ले.प.अ.

फरियाद में याद समाया है
पर , याद में फरियाद कहाँ?
साधना में साधन समाया है
और साधना में आराधना कहाँ?

अनहोनी में होनी समाया है
पर होनी तो हो कर रहती है
जो हुई सो होनी थी
जो हुई सो नियति है।

बेफिक्र में फिक्र समाया है
फिर फिक्र में बेचैनी भी है
बेचैनी में याद से भी ज्यादा
फरियाद होना तय है।
फरियाद में याद समाया है
पर , याद में फरियाद कहाँ?
साधना में साधन समाया है
और साधना में आराधना कहाँ?

अनहोनी में होनी समाया है
पर होनी तो हो कर रहती है
जो हुई सो होनी थी
जो हुई सो नियति है।

बेफिक्र में फिक्र समाया है
फिर फिक्र में बेचैनी भी है
बेचैनी में याद से भी ज्यादा
फरियाद होना तय है।

★★★★★

जनरल डिब्बे

श्री. रोहित साह
कनिष्ठ अनुवादक

जैसे ही ट्रेन रवाना होने को हुई, एक औरत और उसका पति एक ट्रंक लिए डिब्बे में घुसा। दरवाजे के पास ही औरत तो बैठ गई पर आदमी चिंतातुर खड़ा था। उसे पत्ता था कि उसके पास टिकट जनरल है और ये डिब्बा रिजर्वेशन है। टी.सी. को टिकट दिखाते ही उसने हाथ जोड़ दिए। ये जनरल टिकट है। अगले स्टेशन पर जनरल डिब्बे में चला जाना I वरना आठ सौ की रसीद बनेगी कहते हुए टी.सी.आगे चला गया। पति-पत्नी दोनों बेटी के पहला लड़का होने पर उसे देखने जा रहे थे। सेठ ने बड़े मुश्किल से दो दिनों की छुट्टी और सात सौ रूपये एडवांस दिए थे। बीबी और लोहे की पेटी के साथ जनरल बोगी में बहुत कोशिश किए पर घुस नहीं पाए थे। लाचार हो स्लीपर में आ गए थे। "साब! बीबी और सामान के साथ जनरल डिब्बे में चढ़ नहीं सकते। हम यहीं कोने में खड़े रह लेंगे। बड़ी मेहरबानी होगी टीसी की ओर एक सौ का नोट बढ़ाते हुए कहा।

"सौ में कुछ नही होता। आठ सौ रुपये निकालो, वरना उतर जाओ।" "आठ सौ तो गुड्डो की डिलीवरी में भी नही लगे थे साब। नाती को देखने जा रहे है गरीब आदमी है, जाने दो न साब" अबकी बार पत्नी ने कहा-
तो फिर ऐसा करो चार सौ निकालो। एक की रसीद बना देता हूँ, दोनों बैठे रहो। ये लो साब, रसीद रहने दो। दो सौ रुपये बढ़ाते हुए आदमी बोला। "नहीं-नहीं रसीद दो बनानी ही पड़ेगी"। ऊपर से ऑर्डर है। रसीद तो बनेगी ही। चलो जल्दी चार सौ रुपये निकालो। वरना स्टेशन आ रहा है उतरकर जनरल बोगी में चले जाना। इस बार कुछ डाँटते हुए टी. सी. बोला। आदमी ने चार सौ रुपये ऐसे दिया मानो अपना कलेजा निकलकर दे रहा हो। दोनों पति-पत्नी उदास रूआंसे ऐसे बैठे थे मानो नाती के पैदा होने पर नही, उसके शोक में जा रहे हो। कैसे एडजस्ट करेंगे ये चार सौ रुपये ? क्या वापसी के लिए समधी से पैसे मांगना होगा ? नही-नही। आखिर में पति ने बोला- सौ-डेढ़ सौ तो मैं ज्यादा लाया ही था। गुड्डो के घर पैदल ही चलेंगे। शाम को खाना नही खायेंगे। दो सौ तो एडजस्ट हो गए। हाँ, और आते वक्त पसिंजर से आयेंगे। सौ रुपये बचेंगे। एक दिन जरूर ज्यादा लगेंगे सेठ भी चिल्लायेगा। मगर मुन्ने के लिए सब सह लूँगा। मगर फिरभी, ये तो तीन सौ रुपये ही हुए। ऐसा करते है नाना-नानी की तरफ से जो सौ-सौ रुपये देने वाले थे न, अब दोनों मिलाकर सौ देंगे। हम अलग थोड़े ही है। हो गए न चार सौ एडजस्ट।
"मगर मुन्ने के कम करना ....।"
और पति की आँखें छलक पड़ी। "मन क्यूँ भारी करते हो जी। गुड्डो जब मुन्ना को लेकर घर आएगी ,तब सौ दो सौ ज्यादा दे देंगे कहते हुए उसकी भी आँखें छलक पड़ी।
फिर आँखें पोछते हुए बोली –
"अगर मुझे कहीं मोदी जी मिले तो कहूँगी -
"इतने पैसों की बुलेट ट्रेन चलाने के बजाये, इतने पैसों से हर ट्रेन में चार-चार जनरल बोगी लगा दो,जिससे न तो हम जैसों को टिकट होते हुए भी जलील होना पड़े और न ही हमारे मुन्ने के सौ रुपये कम हो।" उसकी आँखें फिर छलक पड़ी।
"अरी पगली ,हम गरीब आदमी है। हमें वोट देने का तो अधिकार है पर सलाह देने का नहीं, रो मत"।

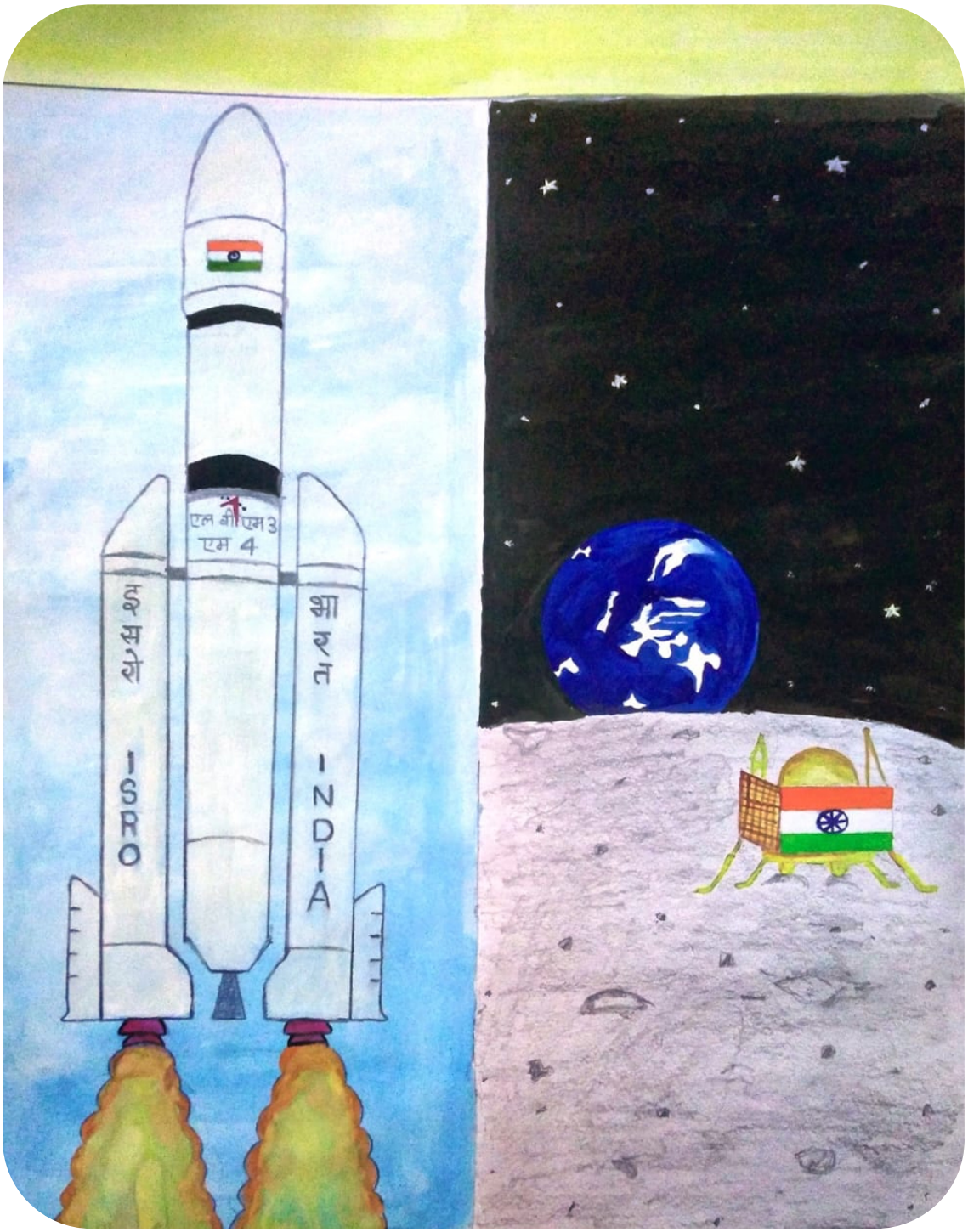

सुश्री अश्विनी सुलपुले

पत्नी श्री संतोष सुलपुले / ले.प.

★★★★★

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की झलकियाँ

हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ

मैं और मेरी डायबिटीज

श्रीमती मनीषा वि.कदम
पर्यवेक्षक

55 साल की उम्र के बाद मुझमें एक दोष चिपक गया उसका नाम है डायबिटीज। मेरी शुगर लेवल बढ़ गयी तो मेरे डॉ. ने मुझे बहुत डाँटा और मुझे ना खाने वाली सभी चीजें बता दी जैसे रोटी,चावल घी,चने दाल के पदार्थ, क्रीम वाला दूध शक्कर,गुड़ ,इत्यादि। मैंने डॉ. से पूछा "डॉ. खाएं तो खाएं क्या? डॉ. ने कहा घास-फूस , गाजर, ककड़ी इत्यादि।

तब मुझे बहुत दुःख हुआ जब डॉ. ने मुझे आम खाने से मना कर दिया| मुझे लगा एक बार मुझे सख्त कारावास की सजा होती तो भी चलता लेकिन आम जैसा सुमधुर फल जो साल में एक बार ही प्राप्त होता है, वह न खाना मतलब आम का अपमान है। मैं चुपके से आम का आनंद उठाती थी Iगाजर- ककड़ी, घास-फूस खाने में मुझे रुचि नहीं थी।

समुद्र में रहने वाले समस्त जलचर और मछलियाँ और जमीन पर रहने वाली मुर्गी तथा बकरी इन्हें खाए बिना मुझे तृप्ति नहीं मिलती थी। डॉ. ने उसपर भी पाबन्दी लगा दी। डॉ. ने कहा तुम खा सकते हो मगर थोड़ा, यह थोड़ा क्या है भाई? मुझे थोड़ा खाने में रुचि नहीं थी। खाए तो पेट भर के नहीं तो बिलकुल नहीं, यह मेरी पॉलिसी है। इसीलिए मैंने मांसाहार छोड़ दिया।

जैसे ही मेरे डायबिटीज का पता चला। मुफ्त में सलाह देने वालों की कतार लग गयी I इसमें मेरी कामवाली ,पडोसी, कार्यालय की सहेलियां शामिल थी। मेरे कामवाली ने कहा "बाई जी आप मिठाइयाँ खाना छोड़ दो" जैसेकि मैं रोज हलवाई की दुकान से आधा किलो लड्डू , गुलाबजामुन और बर्फी खाया करती थी।

मेरे पड़ोसन ने कहा आप रोज 10 किमी. चला करो। पहले ही दिन 5 किमी चलते ही मेरे पैर दुखने लगे। मेरे पति महोदय ने कहा "तुम खाना खाने के बाद तुरंत मत सो जाना, थोड़ा चलना लेकिन खाने के बाद मेरी आँखें तुरंत बंद होती थी। इतना सब सुनने के बाद मैंने ठान लिया कि डायबिटीज को हराना ही होगा। मेरी कोशिश जारी हुई। डायबिटीज ने मेरा जीवन कड़वा और बेरंग बना दिया था। मैं हलवाई की दुकान पर जाती और सुगर फ्री मिठाई ले के आती, लेकिन वह मुझे रुखी-सुखी लगती थी। मधुरता के बिना मिठाई खाने में क्या मज़ा? इसीलिए मैंने मिठाई भी छोड़ दिया। रोज सवेरे उठ के मैंने आधा घंटा चलने का प्रयास किया I पहले पैर में दर्द हुआ लेकिन बाद में मुझे प्रसन्नता हुई।

ऐसे अथक परिश्रम और खाने पे नियंत्रण रखने के बाद मैने दो महीने के बाद सुगर चेक की। वह काफी कम हो चुकी थी। मैंने डॉ. को रिपोर्ट दिखाई। वह खुश हो गया और उसने पूछा "आपके कामयाबी का राज क्या है ? मैंने कहा पहले मैं खाने के लिए जीती थी। अब मैं जीने के लिए खा रही हूँ I बड़ी लड़ाई जीतने के बाद, वीर जैसे घर लौटते है वैसे मैं आनंद से घर आई I ऐसी है मेरी कहानी! आप भी पढ़िए और एन्जॉय कीजिये।

★★★★★

अंगदान (मृत / जीवित)

श्रीमती भाग्यलक्ष्मी भासकरण
स.ले.प.अ.

इस शब्द से मेरा परिचय 1993-94 में हुआ था I जब हम सभी ने मृत्यु के बाद अपने अंगों को दान करने की इच्छा अभिव्यक्त की थी। फिर हम इसे भूल गए।

हाल ही में हमारे कार्यालय में, शिविर आयोजित किया गया था और चिंगारी एक बार फिर प्रज्ज्वलित हुई। एक समय था जब हम सभी कहा करते थे कि मरने के बाद जानवर भी अपनी खाल और सींग द्वारा दवाओं या सामान के उत्पादन में उपयोगी होते हैं परन्तु मनुष्य मरने के बाद केवल जैव-अपशिष्ट होते हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हुए नवाचार का शुक्र मनाईये कि आज क्लोनिंग से लेकर अंग प्रत्यारोपण तक, अब मानव जाति मृत्यु के बाद भी समाज में अपना योगदान दे सकता है। हमारे राष्ट्रीय नेता, गांधीजी ने ठीक ही कहा था कि "मानव जाति की सेवा ही ईश्वर की सेवा है"। मृत्यु के बाद भी यदि कोई सेवा कर सकता है तो, इससे अधिक संतुष्टिदायक और क्या हो सकता है?

हालांकि, यह आश्चर्य की बात है कि चिकित्सा क्षेत्र में इतनी प्रगति के बावजूद, हमारे युवा अचानक बीमारी या गंभीर बीमारी के शिकार क्यों हों रहे हैं ? वर्तमान में कुछ बीमारियां गलत जीवन शैली के प्रभाव के कारण हो रही हैं। आज के समय में अच्छे भोजन और व्यायाम के प्रति लापरवाह रवैये को सुधारने की सख्त जरूरत है।

हम में से सभी न तो समाज की सेवा कर रहे हैं और न ही हम मानव जाति की उन्नति में कोई महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। हम स्वस्थ्य रहकर कम से कम अपने परिवार तथा समाज पर बोझ बनने से बच सकते हैं और अस्पतालों पर पड़ने वाले बोझ को बढ़ाने से रोकने का प्रयास कर सकते हैं।

ऐसा करके, हम मृत्यु के बाद जरूरतमंदों को अपने अच्छे अंगों को दान कर सकते हैं जो मानवजाति के लिए एक महान सेवा होगी। तो आइए जीवित अंग दान नहीं तो मृत अंग दान के लिए खुद को प्रतिबद्ध कर स्वस्थ और महान होने का प्रयास करें क्योंकि ऐसा करने में हमारा कुछ भी नहीं जाता हैं।

तथास्तु !

★★★★★

अंगदान जागरूकता अभियान की झलकियाँ

सत्रहवाँ श्रृंगार

कुमार सौरभ
लेखापरीक्षक

श्रृंगार शब्द के उपयोग मात्र से ही आभास होता है कि यहाँ स्त्रियों के संबंध में बात की जा रही है, क्योंकि इतिहास गवाह है कि पुरुषों की रुचि श्रृंगार करने में कभी भी नहीं रही है; अब इसके पीछे जो भी वजह हो, एक संभावना यह भी हो सकती है कि कदाचित प्रकृति ने ही पुरुषों में वैसी प्रवृत्ति का बीजारोपण न किया हो जिसके फलस्वरुप वे साज श्रृंगार करने की सोचें। सीधे-सीधे कहा जा सकता है कि ये सब सजना-संवरना स्त्री-सुलभ व्यवहार ही है, मर्दों का इन सब से कोई लेना-देना नहीं है। ख़ैर, अब श्रृंगार की बात करें तो हम सब आदि काल से ही सुनते आ रहे हैं कि श्रृंगार कुल 16 प्रकार के होते हैं। आप के मन में यह प्रश्न आना लाज़िमी है कि जबकि मैं स्वयं सोलह श्रृंगार की बात जानता हूँ, तो फिर ये सत्रहवें की बात मैं क्यों कर रहा हूँ? मैं बताता हूँ, तनिक धैर्य धरिए और थोड़ी देर के लिए चलिए मेरे साथ बचपन की सैर पर। आप सबको याद होगा कि जब हम सब ने विद्यालय जाने की शुरुआत की थी तब हमें बड़े करीने से सजा-संवार के पाठशाला भेजा जाता था – कड़क आयरन किए हुए युनिफॉर्म, चमचमाते काले जूते, पैंट या स्कर्ट के एक कोने में एक नैपकिन (रुमाल) भी खोंस दिया जाता था और सबसे ज़रुरी चीज़ जो माँ भूले से भी ना भूलती थीं, वो था थरमस। जी हाँ, आप लड़का हों या लड़की, आपके गले में थरमस ज़रुर लटका दिया जाता था। तब के ज़माने में बच्चों की फ़ोटो भी गले में थरमस लटकाए, पीठ पर बैग टांगे और काजल भरे बिल्लौरी आँखों से कैमरे की तरफ एकटक देखते हुए खींचे जाने की जैसे एक परम्परा सी थी। तो साहब इस प्रकार से बचपन का सत्रहवाँ श्रृंगार थरमस हुआ करता था, जिसके बिना माँ हमें स्कूल नहीं भेजती थीं। फिर हम बड़े होने लग गए और जब तक हाई स्कूल में पहुँचे तब तक आई.डी. कार्ड का चलन आ गया था। स्कूल की तरफ से सबके नाम की एक आई.डी. कार्ड बनवा दी जाती थी, जिसको स्कूल में रोजाना नियम से गले में लटकाना पड़ता था। तब थरमस की जगह फ़ैन्सी बोतलों ने ले ली थी और उन्हें गले की जगह बैग के अंदर स्थान दे दिया गया था। तो इस तरह साहब किशोरावस्था का हमारा सत्रहवाँ श्रृंगार वही आई.डी. कार्ड हुआ करता था। समय का पहिया आगे बढ़ा और हम जवान हो गये, स्कूल कॉलेज की पढ़ाई पूरी करके हम सब चले आए नौकरी में। नौकरी के लिए जब ऑफिस पहुँचे तब यहाँ भी हमें एक आई.डी. कार्ड बनवा दी गयी और फ़रमान सुनाया गया कि यह आई.डी. कार्ड रोज गले में लटकाना है। फ़रमान सुन कर जवानों का रक्त संचार मानो बिजली की तेज़ी से बढ़ने लगा, उन्होंने गले में आई.डी. कार्ड लटकाने का विरोध किया। विरोध करने के पीछे उनका तर्क यह था कि बचपन का श्रृंगार थरमस था, किशोरावस्था का श्रृंगार आई.डी. कार्ड था तो फिर जवानी में फिर से वही आई.डी. कार्ड श्रृंगार का स्थान भला कैसे पा सकता है? बदलते ज़माने और बढ़ती उम्र के साथ फ़ैशन भी तो बदलना चाहिए ना, और फ़ैशन अनुरुप श्रृंगार भी होना चाहिए। सबको बचपन से ही गले में कुछ न कुछ लटकाने की आदत थी ही और खाली गले रहना उन्हें बहुत असहज लग रहा था तो जवानों ने एकजुट होकर आई.डी. कार्ड को अपने बैग, पर्स में दफ़न कर दिया और उसकी जगह अपने गले में लटका लिया इयरफ़ोन।

हाँ जी, तो इस तरह अब कर्मचारियों के गले की शोभा भांति-भांति के कम्पनियों के इयरफ़ोन बढ़ाते हैं। कोई बोट, कोई सोनी, कोई ज़ेब्रॉनिक्स, तो कोई वन प्लस, इत्यादि ब्रांड के इयरफ़ोन अपने गले में सांप की भांति लटकाए पूरे कार्यालय में बिंदास फ़िरते रहते हैं। मुझे तो कभी-कभी लगता है कि भोलेनाथ को भी अपने गले के गिर्द नागराज के लिपटे होने का इतना गर्व न होता होगा, जितना कि आजकल के कर्मचारियों को कार्यालय में स्वैग दिखाने के नाम पर इयरफ़ोन लटकाने का घमंड होता है।

दरअसल असली **सत्रहवाँ श्रृंगार** तो यही इयरफ़ोन है जिसकी ओर मैं आपका ध्यान आकृष्ट कराना चाह रहा था, बाकि सब तो बाध्यकारी थे लेकिन ये वाला श्रृंगार तो सबने सहर्ष और सहज रुप से स्वीकारा है और इसके बिना मानो उनका श्रृंगार ही अधूरा है। एक बार को कर्मचारी ई-ऑफिस का पासवर्ड भूल जाए, मगर मजाल है कि घर से निकलते वक्त अपने गले में यह रस्सा कसना भूल जाए। क्या स्त्री क्या पुरुष, सबको यह श्रृंगार बहुत भाता है, इसलिए ही इसको अपने गले की गोलाई में और छाती के करीब लटकाता है। हालांकि, कार्यालय की दृष्टिकोण से देखें तो इस उपकरण का उपयोग बिल्कुल ही वर्जित है, फिर भी इसके पाँव वामनावतार के पग की तरह बड़ी तेजी से पसर रहे हैं। कार्यालय के शिष्टाचार के विपरीत वर्क स्टेशन पर बैठे-बैठे सबकी नज़र में आये बिना चुपके से वेब सीरीज और फ़िल्में निपटाये जा रहे हैं, गाने सुने जा रहे हैं, कोई फुसफुसा के अपने स्नेहजनों से घंटों गप्पें मार रहा है तो कई लोग मात्र स्टेटस सिंबल के नाम पर ये गले की फांस पहने फ़िर रहे हैं। आलम ये है कि कोई अधिकारी या सहकर्मी इयरफ़ोनधारियों को आवाज़ दे रहे हैं तो वह सुन नहीं रहा है, वो तो मस्ती से दोनों कान में इयरफ़ोन ठूँसे बेख़बर बैठा है। मुद्दा यह है कि क्या इस उपकरण की हमारे कार्यालय में कोई आवश्यकता है? हम किसी कॉल सेंटर, बीपीओ या कस्टमर केयर सेंटर में तो नौकरी कर नहीं रहे हैं, जहाँ इस उपकरण के उपयोग के बिना सुचारु ढंग से काम ही नहीं हो पाएगा। अरे! सोचिए ज़रा एक बार कि कई सारे विभाग ऐसे भी हैं, जहाँ कि वर्क स्टेशन तक मोबाईल फ़ोन (ख़ास कर स्मार्टफ़ोन) भी ले जाना मना होता है, वहाँ आपका फ़ोन रिसेप्शन एरिया में ही जमा हो जाता है और छुट्टी में ही मिल पाता है, तो ऐसे में इयरफ़ोन की तो बात ही रहने दीजिए। क्या ऐसे विभाग के कर्मचारी नौकरी नहीं कर रहे? क्या बिना फ़ोन के वो मरे जाते हैं? नहीं ना? तुलना कर के देखिए कि हमारी स्थिति कितनी बेहतर है कि हम पर इस तरह की कोई पाबंदी नहीं है, हम ज़रुरी फ़ोन क़ॉल्स उठा भी सकते हैं और जब मन करे कॉल कर भी सकते हैं। क्या हमें इतने भर से सुकून नहीं है? अब क्या ऑफ़िस में भी कर्मचारियों को घर वाली सारी सुविधाएँ देना शुरु कर देनी चाहिए, मसलन वीडियोगेम, होम थिएटर, सास-बहु सीरीयल्स देखने की छूट या और भी बहुत कुछ? हद है ना? सोचिए ज़रा कि हम ऑफिस क्यों आते हैं? काम करने के लिए या अपने निजी शौक पूरे करने और व्यक्तिगत दिनचर्या अथवा व्यवहार करने के लिए आते हैं? अब कुछ लोगों का तर्क यही होगा कि काम तो हम करते ही हैं, इन सब में फ़ोन और इयरफ़ोन को बीच में क्यों लाना? (यकीन मानिए कि ऐसा तर्क वही दे रहा होगा जिसको स्वयं ऑफिस के बुनियादी नियम भी पता नहीं होंगे।) हाँ, हम ऑफ़िस में रहते हैं घंटो कॉल्स पे, देखते हैं रील्स अपने फ़ोन पर, तो क्या काम भी तो करते हैं साथ-साथ में। सीरीयसली? क्या आपको लगता है कि ये सब दुराचरण करके आप अपना कार्यसाधन गुणवत्तापूर्ण तरीके से कर पाते होंगे? इसका जवाब है – नहीं, बिल्कुल नहीं। ऐसा हो ही नहीं सकता है कि आप एक ही साथ गाल फूला भी लें और हँस के भी दिखा दें।

मेरे विचार से हर स्थान विशेष की एक गरिमा होती है, वहाँ के कुछ निश्चित नियम-कायदे होते हैं और नियमों से बंध के रहने में ही उस स्थान की उपयोगिता है। अन्यथा मर्यादा-विहीन होकर कौन तरक्की कर पाया है इस दुनिया में? कार्यालय में अनुशासित परिवेश के निर्माण हेतु मेरा परामर्श यही है कि वर्क स्टेशन पर इयरफ़ोन का उपयोग तत्काल प्रभाव से निषिद्ध किया जाए और सबके गले को इस तारनुमा साँप से मुक्ति दिलायी जाए। कार्यालय परिसर में किसी को भी इयरफ़ोन पहनने से रोका जाना चाहिये, क्योंकि यदि उनके गले में इयरफ़ोन मौजूद रहेगा तो इस बात की प्रबल संभावना है कि वे इसका उपयोग भी अवश्य ही करेंगे।

मेडिकली भी इयरफ़ोन के लंबे समय तक उपयोग करने के दुष्प्रभाव देखने को मिले हैं, अतः कर्मचारियों के स्वास्थ्य हितों की रक्षा के लिए भी इयरफ़ोन का उपयोग बंद कराना ही सर्वथा उचित होगा। जबतक हम अपने नये नवेले श्रृंगार को तिलांजलि नहीं दे देते, हम अगले श्रृंगार की खोज कैसे कर पाएंगे? आख़िर आविष्कार रुकने जो नहीं चाहिए। हम सब थरमस से आई.डी. कार्ड, आई.डी. कार्ड से इयरफ़ोन तक आए तो आगे भी यह क्रम जारी रखना पड़ेगा न? किंतु इस क्रम को जारी रखने के लिए सर्वप्रथम ज़रुरी है कि जैसे हमने पहले थरमस से पीछा छुड़ाया, उसके बाद आई.डी. कार्ड से, तो ठीक वैसे ही अब इयरफ़ोन से भी पीछा छुड़ा लें। फिर निकलेंगे किसी नये सत्रहवें श्रृंगार की खोज में।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःख भाग्भवेत।

★★★★★

चित्रकला

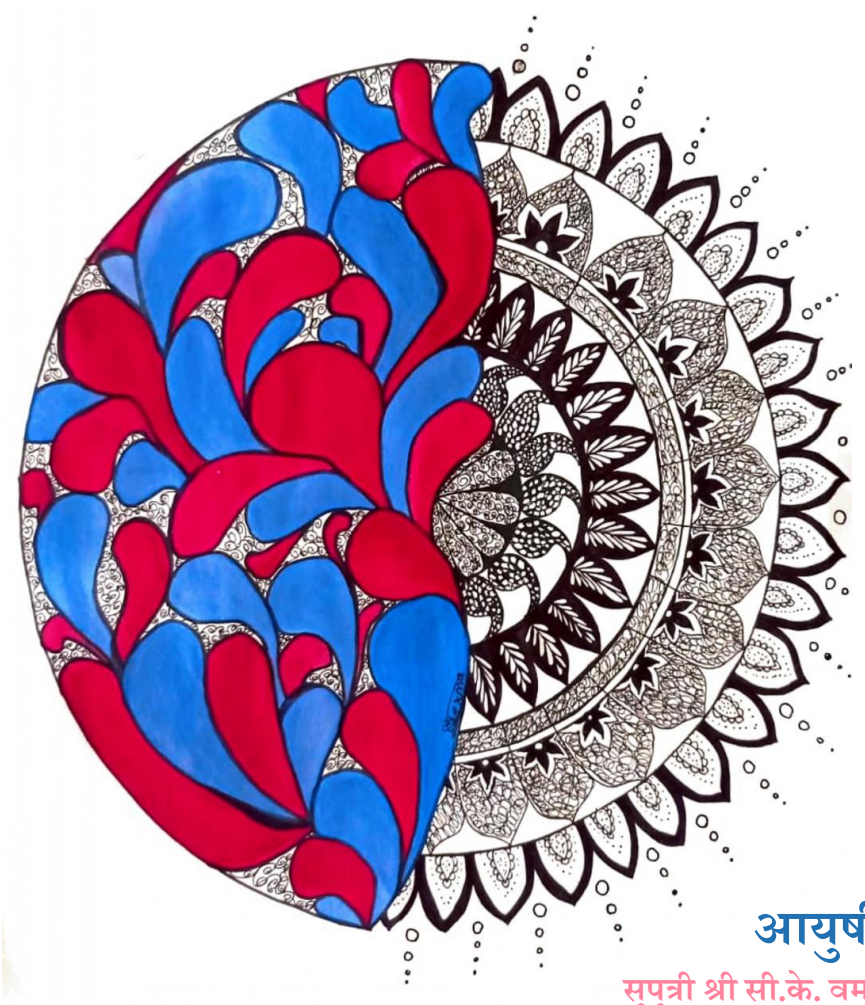

आयुषी वर्मा,
सुपुत्री श्री सी.के. वर्मा/ सहायक पर्यवेक्षक

चित्रकला

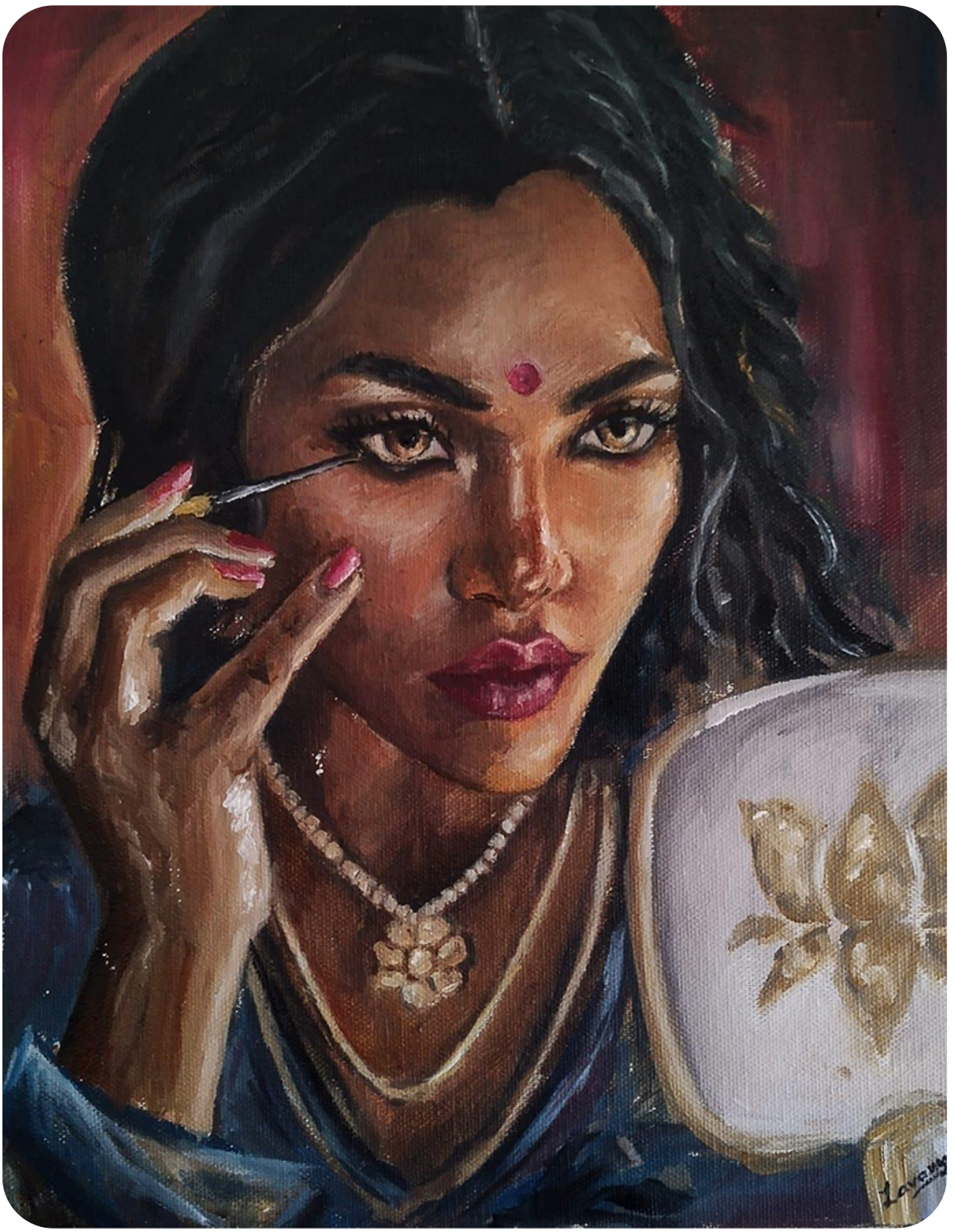

सुश्री लावण्या एन

सुपुत्री सुश्री गार्गी के/ व.ले.प.अ.

चंद्रयान 3 (उम्मीदों का अंतरिक्ष)

श्री हेमंत
डी.ई.ओ

भारत का चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरना एक असाधारण घटना है। तमाम जोखिमों के बावजूद यहां लैंडिंग ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) को वैश्विक अंतरिक्ष दौड़ में उभरता हुआ सितारा बना दिया है। रूस के ताजा मिशन के फेल होने से भी इसरो का अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष बाजार में दबदबा बढ़ गया है। बहुराष्ट्रीय मैनेजमेंट कंसल्टेंसी आर्थर डी लिटिल (एडीएल) की ताजा रिपोर्ट में दावा किया गया है कि वैश्विक अंतरिक्ष उद्योग महत्वपूर्ण बदलाव के दौर से गुजर रहा है। भारत में उभरता हुआ स्पेसटेक स्टार्टअप इस बदलाव का एक उदाहरण है। **2040** तक **100** अरब डॉलर का उद्योग शीर्षक रिपोर्ट के अनुसार, **2040** तक भारत की अंतरिक्ष इकोनॉमी 8 लाख करोड़ रु. तक पहुंच सकती है, जो अभी लगभग **66,400** करोड़ रु. है, यानी **17** साल में **1150%** का जबरदस्त उछाल आने की उम्मीद है।

भारत का एक लाभ भू-राजनीतिक है। रूस और चीन लंबे समय से लॉन्च के लिए कम लागत वाले विकल्प उपलब्ध करा रहे हैं, लेकिन यूक्रेन युद्ध ने रूस की भूमिका खत्म कर दी है। बीते साल सितंबर में रूस ने ब्रिटिश सैटेलाइट स्टार्टअप वनवेब के **36** अंतरिक्ष यान जब्त कर लिए इससे उसे **230** मिलियन डॉलर का नुकसान हुआ। इसके बाद वनवेब ने अपने उपग्रह भेजने के लिए इसरो का रुख किया। ऐसे ही अमेरिकी सरकार द्वारा चीन की तुलना में भारत के जरिए किसी भी यूरोपीय व अमेरिकी कंपनी को सैन्य-ग्रेड तकनीक भेजने के लिए मंजूरी देने की अधिक संभावना होगी। भारत अंतरिक्ष उद्योग के लिए उच्च विकास दर का लक्ष्य रख सकता है।

इसरो की उपग्रह भेजने की सफलता दर **95%** है। इसने उपग्रह की बीमा लागत आधी कर दी है। इन वजहों से भारत दुनिया में सबसे प्रतिस्पर्धी प्रक्षेपण स्थलों में से एक बन गया है। चंद्रयान की सफलता भारत को इस क्षेत्र में वर्ल्ड लीडर बनाने में मदद करेगी। रॉयटर्स के मुताबिक, भारत ने हाल में सैटेलाइट प्रक्षेपण रॉकेट बनाने की बोलियां आमंत्रित की थीं। **20** निजी कंपनियों ने रुचि दिखाई। हमारी नई अंतरिक्ष नीति लार्सन एंड टूबो जैसी कंपनियों को लॉन्च वाहन और उपग्रह बनाने की अनुमति देगी। इसरो ने छोटे सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल को निजी क्षेत्र में देने की योजना बनाई है।

भारत में **140** स्पेस स्टॉर्टअप रजिस्टर्ड हैं। यह बढ़ोतरी बीते कुछ वर्षों में हुई है। कोरोना महामारी की शुरुआत के समय इनकी संख्या **5** के आसपास ही थी। पिछले साल अंतरिक्ष स्टार्टअप ने नए निवेश में करीब. **990** करोड़ रु. जुटाए, जो सालाना दोगुनी या तिगुनी दर है। इसरो के साथ व्यापार करने के लिए बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे आदि में लगभग **400** निजी कंपनियां बनी है। ये विशेष स्क्रू सीलेंट और अन्य उत्पादों की निर्माण सामग्री उपलब्ध करा रही हैं।

भारत में स्पेस इकोनॉमी को बढ़ावा देने के लिए लगातार आवंटन बढ़ा है। वित्त वर्ष **2016-17** में यह सिर्फ **7,510** करोड़ रुपए था। **2023-24** के बजट में इसे बढ़ाकर **12,543** करोड़ रुपए कर दिया गया। यानी पिछले **7** सालों में बजट **67** प्रतिशत बढ़ा है। हालांकि यह राशि **2022-23** में आवंटित राशि **13,700** करोड़ रुपए से कम है। आर्थर डी लिटिल (एडीएल) की रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय अंतरिक्ष बाजार का मूल्य वर्तमान में **66,400** करोड़ रुपए है। यह **4** प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ रहा है, जो वैश्विक औसत के **2** प्रतिशत से अधिक है।

स्वतंत्रता दिवस की झलकियाँ)

★★★★★

स्वतंत्रता दिवस की झलकियाँ)

देश वंदन

श्री किशोर कुमार
स.ले.प.अ.

हमारा भारत देश महान
इसने किये हैं बड़े-बड़े काम
यहाँ के हर कंकड़ में है शंकर
और नदियों की धारा है पवित्र धाम
हमारा भारत देश महान।

जी-20 के सम्मेलन को हमने गाँव-गाँव पहुँचाया
विदेशी मेहमानों को भारत की संस्कृति और धरोहर से रू - ब - रू कराया
विविधता को देख हो गए सब हैरान
हमारा भारत देश महान।

चंद्रयान-3 ने सफलता का परचम लहराया
चाँद के दक्षिण ध्रुव पर तिरंगा फ़हराया
वैज्ञानिकों ने देश का मान बढाया
पूरा विश्व कर रहा गुणगान
हमारा भारत देश महान।

★★★★★

भारत

श्री. आदित्य कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

है नमन इस देश की धरती को जिसने,
हमेशा शूरवीरों को अपने गोद में पालन किया।

कभी हिंसा से ना ही और ना ही क्रुरता से,
किसी भी गैर की धरती पर हमने हमला किया।

दिया है जग को मार्ग जिसने सत्य और शांति का,
अहिंसा का उपदेश देकर, मानवों को प्रबुद्ध किया।

हमने सदा ही प्रेम और अपनत्व से ही,
सबको अपनी धरती के आंचल का पालना दिया।

जग के अंधियारों को अपने वेद और साहित्य से,
तिमिर से आलोक तक जाने का मार्ग दिया।

भरत और राम की पुण्य पावन है धरा ने,
विश्व को वसुधैव कुटुंबकम का जीवन मंत्र दिया।

★★★★★

वस्तु एवं सेवा कर : इ-वे बिल

श्री. मुनिनाथ यादव
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

भारत में अब किसी किसी सामान (Goods) को खरीदने या किसी सेवा (Services) को प्राप्त करने पर GST चुकाना पड़ता है। जीएसटी का Full Form होता है- Goods And Services Tax । हिन्दी में इसका अर्थ होता है- वस्तु एवं सेवा कर। इसे, वस्तुओं की खरीदारी करने पर या सेवाओं का इस्तेमाल करने पर चुकाना पड़ता है। पहले मौजूद कई तरह के टैक्सों (Excise Duty, VAT, Entry Tax, Service Tax वगैरह) को हटाकर, उनकी जगह पर एक टैक्स GST लाया गया है। वस्तु एवं सेवा कर 1 जुलाई 2017 से पूरे देश में यह लागू हो चुका है।

ई-वे बिल क्या है?

ई-वे बिल, एक तरह का इलेक्ट्रॉनिक बिल है जो कंप्यूटर पर बनता है। GST सिस्टम के तहत किसी भी सामान को एक जगह से दूसरी जगह पर भेजने के लिए उस सामान का ऑनलाइन बिल तैयार किया जाता है। यह बिल जीएसटी पोर्टल पर दर्ज हो जाता है। सरल शब्दों में समझा जाए तो इसी ऑनलाइन बिल को ई-वे बिल कहा जाता है।

यह बिल 50,000 रुपये या उससे अधिक मूल्य के सामान को एक जगह से दूसरी जगह पर ले जाने के लिए ज़रूरी है। वस्तु और सेवा कर अधिनियम की धारा 68 के तहत, वस्तु की आवाजाही शुरू होने से पहले पंजीकृत लोगों या ट्रांसपोर्टरों द्वारा एक ई-वे बिल तैयार किया जाना चाहिए।

किस स्थिति में ई-वे बिल जरूरी है?

अगर Transport से भेजे जाने वाले वस्तु की कीमत 50 हजार रुपए से ज्यादा है तो उसके लिए E-Way Bill बनाना अनिवार्य होगा। इसे GST Common Portal पर दर्ज करने की जिम्मेदारी मुख्य रूप से माल भेजने वाले (Supplier) की होगी। लेकिन इसे जरूरत समझने पर, वस्तु मंगाने वाला (Receiver) या वस्तु वाहन से ले जाने वाला (Transport) भी जारी कर सकता है। वस्तु अगर 50000 रुपए से अधिक कीमत का है। तो चाहे उसे राज्य के अंदर भेजा जा रहा हो (Inter State Trade), या राज्य के बाहर (Intra State Trade), हर तरह के वस्तु ट्रांसपोर्ट के लिए E-Way Bill बनाना होगा। हालांकि कुछ खास सामानों के लिए कीमत की इस Limit में भी छूट दी गई है।वैसे तो, 50 हजार रुपए से कम कीमत का माल होने पर E-Way बिल जारी करना आवश्यक नहीं है, लेकिन वस्तु को भेजने वाला (Supplier) या उसे प्राप्त करने वाला (Receiver) , चाहे तो E- Way Bill जारी कर सकता है।

कौन जारी कर सकेगा ई-वे बिल दो कारोबारियों के बीच सौदा होने की स्थितियों में उसे दो तरह से भेजने के विकल्प हो सकते हैं।

- पहला, वस्तु को उसके Supplier या उसके Receiver के खुद के वाहन में भेजा रहा हो।
- दूसरा, वस्तु को किसी तीसरी पक्ष, यानी की Transport के माध्यम से भेजा जा रहा हो।

दोनों अलग-अलग स्थितियों में E-Way Bill जारी करने की जिम्मेदारी इस प्रकार होगी।

- GST में रजिस्टर्ड कोई Supplier या या उसे प्राप्त करने वाला कारोबारी (Recipient), अगर अपने खुद के वाहन में वस्तु ले जा रहा है तो उन्हीं में से किसी एक को E-Way Bill जारी करना होगा। इसमें भी पहली जिम्मेदारी वस्तु के Supplier की बनती है। वस्तु रवाना करने से पहले GST Common Portal पर जाकर वे इस प्रक्रिया को पूरी कर सकते हैं।

• अगर वस्तु को Transporter के माध्यम से भेजा जा रहा है तो फिर वस्तु को Transporter को सौंपने से पहले ही उसके Supplier या Receiver ई-वे बिल जारी कर सकेंगे। अगर Supplier या Receiver ने ई-वे बिल जारी नहीं किया है तो वस्तु रवाना करने के पहले ही Transporter को खुद ई-वे बिल जारी करना होगा। हालांकि, इसमें भी कुछ जानकारी Supply करने वाले और Receive करने वाले की ओर से भरी जाएगी।

कुल मिलाकर, वस्तु का Movement शुरू होने के पहले ही E-Way Bill जारी कर दिया जाना है। चाहे कारोबारी खुद उसे जारी करके वस्तु भेजें, या फिर Transporter वस्तु ले जाने के पहले उसे जारी करे।

ई-वे-बिल में क्या जानकारी भरनी होती है?

ई-वे बिल में माल भेजने वाले (Supplier) का डिटेल, वस्तु ले जाने वाले Transport का डिटेल और वस्तुएं पाने वाले (Recipient) बारे में डिटेल दर्ज करना होगा। जीएसटी नेटवर्क पर E-Way Bill अपलोड करते वक्त उसके लिए एक यूनिक E-Way Bill Number (EBN) जनरेट हो जाएगा। वस्तुओं के आवागमन में भागीदार तीनों पक्षों, Supplier, Transporter और माल प्राप्त करने वाले, सबके लिए उस खेप (Consignment) का वही E-Way Bill Number रहेगा।

E-Way Bill में वस्तु बेचने वाले (Supplier) को यह जानकारी देनी होती है कि वह किस सामान को बेच रहा है। उधर वस्तु खरीदने वाले (Recipient) को यह जानकारी देनी होती है कि उसने किस सामान को खरीदा है। अगर सामान को वापस (Return) या रिजेक्ट कर दिया गया है तो इसकी भी जानकारी GST के पोर्टल पर देना अनिवार्य है। अगर वस्तु प्राप्त करने या उसे Reject करने के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई तो यह मान लिया जाएगा कि उसने वस्तु को स्वीकार (Accept) कर लिया है।

ई-वे बिल की चेकिंग की प्रक्रिया और अधिकार

• वस्तु ले जाने वाले को या transporter को या फिर उनके Representative को कागजी बिल या Delivery Challan ले जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। हां, वस्तु की Supply या उनके वितरण संबंधित Challan और उनके साथ E-Way Bill या E-Way Bill Number की एक प्रति रखनी होगी। ये E-Way Bill Number एक Radio Frequency Identification Device के साथ Link हो जाता है।

• उधर Tax विभाग के अधिकारी, वस्तु परिवहन के चेकिंग स्थलों पर भी Radio Frequency Identification Device readers इंस्टाल करवा देंगे। जब भी वाहन यहां से गुजरेगा, इस नंबर को Device के पास ले जाने पर अपने आप उसकी सारी जानकारी Computer पर Show करने लगेगी। E-Way Bill के माध्यम से ही जीएसटी अधिकारी Transport किये गए वस्तु के बारे में यह सुनिश्चित करें सकेंगे कि उस वस्तु पर उचित तरीके से GST लगाया गया है कि नहीं।

• E-Way Bill के नियमों के मुताबिक, Tax Commissioner या उसकी ओर से अधिकृत Officer को वस्तु के Transport होने के दौरान कहीं भी उसकी जांच करने का अधिकार होगा। वाहन चालक या वस्तु ले जाने वाले को अपने E-Bill की प्रति या Electronic प्रति दिखानी होगी।

• किसी दिन के E-way Bill की जांच के बाद उस अधिकारी को एक दिन के अंदर, Checking संबंधी डिटेल की समरी प्रस्तुत करनी होगी। इसके बाद 3 दिन के भीतर उसकी Final Report भी भेजनी होगी।

कितने समय तक के लिए मान्य होगा ई-वे बिल

• अगर किसी वस्तु का Transport 200 किलोमीटर तक होना है तो उसके लिए बना E-Way Bill सिर्फ 1 दिन तक के लिए मान्य होगा।

- जिस वस्तु का Transport. 200 किलोमीटर से अधिक होना होगा, उसका E-Way Bill , additional 1 दिन for every 200 किलोमीटर or any part के लिए मान्य होगा।

Note1: किसी एक राज्य के भीतर अगर 10 किलोमीटर के दायरे में माल भेजा जा रहा है तो उसके लिए E-Way Bill बनाने की जरूरत नहीं होगी।

Note2: E-Way Bill की वैधता वाली समय सीमा के अंदर वस्तु की ढुलाई (Transport) पूरी करना आवश्यक होगा। किसी कारणवश ऐसा नहीं हो पाता है तो फिर से E-Way Bill बनवाना होगा।

ई वे बिल में दूरी तय करने के लिए जीएसटी की सिस्टम पिन कोड का सहारा लेता है। जैसे ही आप वस्तु भेजने और वस्तु पाने वाली जगह का पिन कोड डालते हैं सिस्टम उस जगह का नाम और दोनों की बीच की दूरी खुद बता देता है। इसी दूरी के आधार पर ई वे बिल की वैलेडिटी तय हो जाती है।

ई-वे बिल को निरस्त करने की सुविधा

ई-वे बिल बन जाने के बाद, किसी बदलाव की स्थिति में SMS के जरिये उसे निरस्त कराया जा सकता है। जरूरत पड़ने पर SMS की मदद से दूसरा E-Way Bill भी बनवाया जा सकता है।

ई-वे बिल से बाहर रखे गए सामान

सरकार ने कई सामानों को E-Way Bill से बाहर रखा है। भले ही उनकी खेप E-Way Bill के लिए निर्धारित कीमत सीमा 50 हजार से अधिक हो। इनमें LPG, केरोसिन, करेंसी, न्यूज पेपर, न्यायिक और गैर न्यायिक स्टांप पेपर, पूजा सामग्री, काजल, दिए, आभूषण, खादी, कच्चा रेशम, भारतीय झंडा, Municipal Waste वगैरह शामिल हैं। इनके अलावा Non Motor Convenience, पोर्ट से Transport होने वाले सामान, एयरपोर्ट, Airport Cargo Complex और Land Custom Station के लिए भेजने या लेकर आने वाले सामान के लिए भी E Way Bill बनाना जरूरी होगा।

ई-वे बिल का फायदा

E- Way Bill व्यवस्था लागू होने से सरकार, कर प्रशासन और कारोबारी वर्ग, तीनों को सहूलियत रहेगी।

- कारोबार का ज्यादा हिस्सा कर की जद में आ जाने से सरकार को, ज्यादा मात्रा में कर मिलेगा। राष्ट्रीय स्तर पर यह System लागू होने के बाद हर राज्य में एक जैसे नियम लागू हो जाएंगे। इससे एक राज्य से दूसरे राज्यों के बीच माल के आवागमन (Transport) में सहूलियत रहेगी। साथ ही पारदर्शिता (Transparency) और निष्पक्षता के साथ साथ वस्तु ट्रांसपोर्ट ज्यादा तेज गति से होगा। इससे कारोबारी माहौल को तेजी से विकास करने में मदद मिलेगी।
- सरकार को कर व्यवस्था पर नजर रखने में आसानी रहेगी। कर विभाग के अधिकारी Transport से भेजे जा रहे वस्तु की कहीं भी Checking कर सकेंगे। कर अधिकारी के पास भी GST नेटवर्क से जुड़ी Machine होगी, जो उस E-Way Bill से जुड़ी जानकारी को सत्यापित कर सकेगी। वस्तु भेजने के पहले ही E-Way Bill बनने से कर प्रशासन को टैक्स चोरी रोकने में मदद मिलेगी।
- E-Way Bill के ऑनलाइन मौजूद होने से कारोबारियों या Transporters को उसके खोने या नष्ट हो जाने की चिंता नहीं रहेगी। GST Network पर पूरा डिटेल मौजूद होने से, उसे कभी भी कही भी ऑनलाइन देखा और दिखाया जा सकता है। कारोबारियों और कर विभाग के कर्मचारियों में मिलीभगत और मनमानी की गुंजाइश पर भी लगाम लगेगी।

★★★★★

स्टार्ट अप इंडिया

श्री मानवेन्द्र पाण्डेय
स.ले.प.अ.

ब्रह्माण्ड के सृजन की शुरुआत से प्रतिक्षण बदलाव हो रहा है। आज मानव अपने आकार में अत्यंत ही छोटे मस्तिष्क से इतने बड़े–बड़े विचार पैदा करके नित नूतन अविष्कारों को जन्म दे रहा है। भारतवर्ष जो अपने प्राचीनतम सभ्यताओं से एवं अपने दैनिक क्रिया-कलापों में वैज्ञानिकता को संजोये हुए है। इसी विचारधारा को ध्यान में रखते हुए 16 जनवरी 2016 को स्टार्ट अप इंडिया की शुरुआत की गई। इस योजना से भारत देश के युवा सोंच को एक आधार मिला जिससे वे अपने विचारों को पोषित करके देश विकसित करने में अपना योगदान दे सके।

स्टार्ट अप इंडिया के तहत किसी भी स्टार्ट अप को एक सीमित देयता भागीदारी (एल.एल.पी.) के अंतर्गत पंजीकृत होना चाहिए और 10 वर्ष से ज्यादा पुरानी एल.एल.पी. न हो जिसका वार्षिक कारोबार 100 करोड़ रुपये से कम हो। स्टार्ट अप इंडिया में पंजीकृत होने से स्टार्ट अप इकाई (एन्टिटी) को अपने विचारों को पोषित एवं फलीभूत करने के लिए भारत सरकार अनेक सुविधाएँ भी प्रदान करती है। स्टार्ट अप इंडिया का मुख्य कार्य अनेक ऐसी अनौपचारिक नियम जो व्यवसाय करने में रूकावट पैदा करती है उनको आसान बनाना एवं स्टार्ट अप इकाई को प्रोत्साहित करने के लिए आयकर में छूट, निरीक्षण में छूट, और कई नियमों का स्वतः प्रमाणन की आज़ादी देकर व्यवसाय को प्रोत्साहित करने में मदद करना है।

इस योजना के 7 वर्षों में लाखों स्टार्ट अप इकाईओं का पंजीकरण ही इसकी सफलता का सबूत है। इसके शुरुआत से अब तक करीब 100 स्टार्ट अप इकाइयाँ जो 200 करोड़ रुपये से ज्यादा का वार्षिक कारोबार कर रही है। इसमे बिलडेस्क, पॉलिसी बाज़ार, बाईजू, ओयो, स्विगी, ड्रीम 11, लेंस्कार्ट ,बिग बास्केट,नाईका फ़ोन पे ,अनएकेडमी और हाल –फिलहाल में जेप्टो इस लिस्ट में शामिल है।

स्टार्ट अप इंडिया जैसी महत्वपूर्ण योजना के करना कई क्षेत्रों में ऐसे-ऐसे अविष्कारों को जन्म दे रहा है जिसके कारण आगामी वर्षों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष अनुसन्धान से लेकर मानव के सूक्ष्मतम आवश्यकता की पूर्ति हेतु नए विचारों को फलीभूत करने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान करेगा।

★★★★★

सेवा निवृत्ति की झलकियाँ

श्री ए.जे.मकवाना, व.ले.प.अ.

सेवानिवृत्ति दिनांक: 31.07.2023

श्री सी.आर. कृष्णन, स.ले.प.अ.

सेवानिवृत्ति दिनांक: 30.06.2023

सेवा निवृत्ति की झलकियाँ

श्रीमती आशा नारायण, पर्यवेक्षक

सेवानिवृत्ति दिनांक: 31.08.2023

श्री किशोर कामटेकर, एम.टी.एस.

सेवानिवृत्ति दिनांक: 31.03.2023

अंतराष्ट्रीय योग दिवस की झलकियाँ

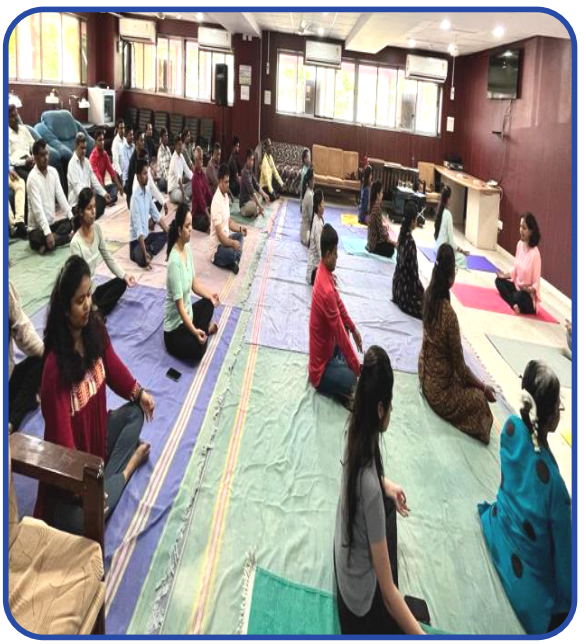

प्रतापगढ़ दुर्ग, सतारा(महाराष्ट्र)

प्रतापगढ़ दुर्ग : यह किला पोलादपुर से 15 किलोमीटर दूर और महाबलेश्वर के पश्चिम से 23 किलोमीटर दूर है जो एक लोकप्रिय हिल स्टेशन भी है। यह समुद्र तल से 1080 मीटर की ऊंचाई पर है। इसे प्रतापगढ़ की लड़ाई के लिए भी जाना जाता है जो कि किले के प्राचीर के नीचे छत्रपति शिवाजी महाराज और अफजल खान के बीच लड़ी गई थी। किले में छत्रपति शिवाजी महाराज की एक कांस्य घुड़सवारी वाली मूर्ति मौजूद है।

सह्याद्रि